Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَكَانَ اللهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا

(सूरत अन्निसा आयत :135)

अनुवाद: जो दुनिया का बदला चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया का बदला भी है और अख़िरत का भी। और अल्लाह बहुत सुनने वाला और बहुत देखने वाला है ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 6

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक-1

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

22 जमादी अल्अव्वल 1442 हिज्री कमरी 7 सुलेह 1400 हिज्री शम्सी 7 जनवरी 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आजकल के शोध से ताऊन की जड़ कीड़े या छोटे कृमि प्रमाणित हुए हैं
मैं भी इस शोध को पसंद करता हूँ क्योंकि इस से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानता और इस्लाम की सत्यापन प्रमाणित होती है

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ताऊन के दिनों में गर्वनमेंट के कार्य उचित थे।

गर्वनमेंट को यदि तुम्हारे साथ सच्ची हमदर्दी नहीं तो तुम ख़ुद ही बतलाओ कि इस क़दर रुपया वह क्यों ख़र्च करती है। हस्पताल और डाक्टर क्यों निर्धारित किए जाते हैं। हज़ारों पुलिस के आदमी प्रबन्ध के लिए क्यों निर्धारित किए। क्या उसे कुछ शौक़ है कि इस क़दर ख़र्च उठाए? नहीं। बल्कि देश की यह हालत देखकर वह अंदर ही अंदर मेहरबान माँ की तरह बेचैन हो रही है। गर्वनमेंट भी प्रजा ही से है। लोगों को शायद ख़बर नहीं। हदीस में आया है कि क़यामत में लोग ताऊन से मारे जाएंगे। सितारों का ज्ञान रखने वालों की बातें यद्यपि वर्णन योग्य नहीं परन्तु हिंद और यूरोप के मुंजम कहते हैं कि नवम्बर 1899 ई में सितारे जमा होंगे और ख़ौफ़नाक वक़्त आएगा। हमको उसकी तो परवाह न थी परन्तु हमको तो यह ग़म है कि हमारे इलहाम में भी आइन्दा दो जाड़ों का सख़्त अंदेशा है बशर्ति के लोग साधा मार्ग धारण न करें और ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजू न करें। बुरे कारम, व्यभिचार, चोरियां और हर एक किस्म के धोखे और बुरे कामों को छोड़कर हर तरह के बुरे कर्मों से इज्तिनाब न करें तो सख़्त ख़तरा और अंदेशा है। एक भयावह और डरावना नज़ारा हमारे सामने है। अब बतलाओ कि हम गर्वनमेंट को क्यों दोषी ठहराएँ? अत: मैं नसीहत करता हूँ कि हमारी जमाअत को उचित नहीं है कि वह अज्ञानियों का तरीका धारण करें। और मुर्खों और कोताह अंदेशों की चाल चलें। मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि गर्वनमेंट ने जितनी हिदायतें जारी की हैं वे सेहत के लिए बहुत लाभदायक हैं। हमारी तारीख़ की किताबों में जैसे तिबरी इत्यादि की जो हज़ार साल से पहले की रचना है लिखा है कि हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो के युग में जब लश्कर शाम देश में था। महामारी पड़ी। उस वक़्त लश्कर को पहाड़ पर भेजना पड़ा। तो यह गर्वनमेंट ही का इजाद किया हुआ का नुस्ख़ा नहीं बल्कि अहले इस्लाम का तरीका भी इसी तरह साबित होता है। जैसे उन्होंने घाटी को छोड़कर पहाड़ की बुलंदी को धारण किया इसी तरह अब भी नमी वाले और निचले स्थानों को छोड़कर खुले मैदानों में मरीज़ों को रखा जाता है। बू अली सीना ने भी इस बात पर ज़ोर दिया है कि घरों की सफ़ाई की जाए। क्योंकि जब तक कारण मौजूद है नतीजा नष्ट नहीं हो सकता तबीब क्या कर सकता है माशा दो माशा दवा देगा परन्तु वह सड़ांध जो सांस के माध्यम से अन्दर चली जाती है। इस को वह दवा क्या करेगी। इस घर में बैठ कर ताऊन का क्या इलाज हो सकता

शेष पृष्ठ 12 पर

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ के चमत्कार

(933) हज़रत अनस बिन मालक से मर्वी है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में लोगों को अकाल की मुसीबत पड़ी। उसी समय में कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुम्आ के दिन ख़ुत्बा इरशाद फ़र्मा रहे थे एक देहाती खड़ा हुआ और उसने कहा : हे रसूलुल्लाह! जानवर मर गए हैं और बाल बचे भूखे हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह हमारे लिए दुआ करें। तब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दोनों हाथ उठाए और हालत यह थी कि आसमान में बादल का एक टुकड़ा भी हमें नज़र न आता था। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हाथ नीचे नहीं किए थे कि बादल पहाड़ों की तरह उमड़ आए और मंच से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त तक नहीं उतरे जब तक मैंने बारिश की बूंदे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दाढ़ी पुर से टपकती न देखी। अत: उस दिन दिन-भर हम पर बारिश होती रही और अगले दिन भी और इससे अगले दिन भी और इसके बाद के दिनों में भी दूसरे जुमआ तक। रावी ने कहा फिर वही देहाती या कोई और व्यक्ति उठा और उसने कहा हे रसूलुल्लाह! इमारतें गिर गईं और जानवर डूब गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह से हमारे लिए दुआ करें। तब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ उठाए और कहा हे अल्लाह ! हमारे इर्दगिर्द (हो) और हम पर न हो। आप बादल के जिस किनारे की तरफ़ भी अपने हाथ से इशारा फ़रमाते वह फट जाता। और मदीना तालाब की तरह बन गया था और क़नात का नाला महीना भर बहता रहा और जिस तरफ़ से भी कोई आता इसी की अत्याधिकता की ही बात करता।

(बुख़ारी, जिल्द 2 किताबुल जुमआ, प्रकाशित क़ादियान)

जिस ख़ुदा ने तुम को बे-जान से जानदार बनाया, और फिर जान देने के बाद मौत देता है। उसके सम्बन्ध में यह विचार करना कि इस मौत के बाद दूसरा जीवन नहीं देगा बुद्धि के विपरीत है

अल बक़रा आयत 29

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ

में सय्यदना हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो फ़रमाते हैं

इस आयत में यह बताया गया है कि जिस ख़ुदा ने तुम को बे-जान से जानदार बनाया और फिर जान देने के बाद मौत देता है, उसके सम्बन्ध में यह ख़्याल करना कि इस मौत के बाद दूसरी ज़िंदगी न देगा बुद्धि के विपरीति है। और यदि दूसरी ज़िंदगी मिलनी है। तो फिर कोई हिदायत भी उसकी ओर से अवश्य आनी चाहीए ताकि वह इन्सान को दूसरे जीवन के लिए तैयार करे।

क्या सादा और सरल तर्क है कि एक बेजान को जानदार बनाने की अल्लाह तआला को क्या ज़रूरत थी यदि कोई विशेष उद्देश्य उसके सपुर्द न था फिर कल्पना करो कि कोई उद्देश्य न था तो एक विवेकवान और दूरदर्शिता रखने वाले व्यक्ति को पैदा कर के मारा क्यों यदि इसी दुनिया की ख़ुशी और चेन इन्सान के लिए प्रारब्ध था तो फिर इतने लंबे अमल के बाद बे-जान से जानदार बना कर उसे मौत का मज़ा क्यों चखाया जब तक कि इस मौत के बाद एक और उत्तम धार्मिक जीवन दृष्टिगत न था।

इस आयत में उन लोगों का भी रद्द है जो यह समझते हैं कि मरने के बाद क़ब्र का अज़ाब कोई नहीं बल्कि जन्नत दोज़ख़ से ही

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रिरेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-1)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का जर्मनी की लिए रवाना होना

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः मुहयुद्दीन फ़रीद)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की यात्रा यूरोप (सितम्बर, अक्तूबर 2019) पिछले अंक में समाप्त हो चुकी है। अलहम्दो लिल्लाह। अब इस अंक से वर्ष 2015 की रिपोर्ट शामिल करके प्रकाशित की जा रही है। जब तक हुज़ूर अनवर के यात्रा की कोई ताज़ा रिपोर्ट प्राप्त नहीं होती पिछली वे समस्त रिपोर्टें जो प्रकाशित नहीं हो सकीं वे शामिल करके प्रकाशित की जाएँगी। ताज़ा रिपोर्ट प्राप्त होने पर पिछली रिपोर्ट रोक कर ताज़ा रिपोर्ट प्रकाशित की जाएगी। (संपादक)

23 मई हफ़्ता के दिन 2015

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ जर्मनी की यात्रा पर रवाना होने के लिए सुबह दस बजे अपने रहने के स्थान से बाहर पधारे। अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहने के लिए सुबह से ही जमाअत के लोग पुरुष तथा महिलाए मस्जिद बैयतुल फ़ज़ल लंदन के बाहरी सेहन में एकत्र थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए लोगों के मध्य उपस्थित रहे। हर एक ने अपने प्यारे आक़ा के दर्शन का सौभाग्य पाया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई जिस के बाद चार गाड़ियों पर आधारित क़ाफ़ला बर्तानिया के एक तटीय शहर DOVER की ओर रवाना हुआ।

DOVER बंदरगाह इंग्लिस्तान की प्रसिद्ध बंदरगाहों में से एक है। लंदन और इस के इर्द-गिर्द के क्षेत्रों में आबाद लोग यूरोप की यात्रा FERRIES के माध्यम से इसी बंदरगाह से करते हैं।

DOVER से ग्यारह मील पहले वह प्रसिद्ध CHANNEL TUNNEL आती है जो समुंद्र के नीचे से बर्तानिया और फ्रांस के तटीय क्षेत्रों को आपस में मिलाती है। इस सुरंग के माध्यम से कारें और अन्य गाड़ियां ट्रेन के माध्यम से फ्रांस के शहर CALAIS तक पहुँचती हैं। आज इसी CHANNEL TUNNEL के माध्यम से क़ाफ़ला के यात्रा का प्रोग्राम था।

लंदन से आदरणीय रफ़ीक़ अहमद हयात साहिब अमीर जमाअत अहमदिया यूके, आदरणीय अताउल-मुजीब राशिद साहिब नायब अमीर तथा मुबल्लिग़ इंचार्ज यूके, आदरणीय वसीम अहमद चौधरी साहिब सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह यूके, आदरणीय मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब, आदरणीय नासिर इनाम साहिब प्रिंसिपल जामिआ अहमदिया यूके, आदरणीय अख़लाक़ अहमद अन्जुम साहिब (वकालत तब्शीर आदरणीय ज़हूर अहमद साहिब (दफ़्तर प्राईवेट सेक्रेटरी), आदरणीय मेजर महमूद अहमद साहिब(अफ़्सर हिफ़ाज़त ख़ास)और आदरणीय इमरान ज़फ़र साहिब (मुहतमिम उमूमी ख़ुद्दाम की सिक्योरिटी टीम के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए CHANNEL TUNNEL तक क़ाफ़ला के साथ आए थे।

लगभग एक घंटा 35 मिनट की यात्रा के बाद ग्यारह बजकर चालीस मिनट पर CHENNEL TUNNEL पहुंचे इस के बाद इमीग्रेशन की कार्रवाई और अन्य सफ़र के मामलों की पूर्णता के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ चैनल टनल के पार्किंग एरिया में पधारे।

12 बजकर 35 मिनट पर गाड़ियां ट्रेन पर बोर्ड की गईं। यह ट्रेन दो मन्ज़िलों पर आधारित है और उस के अंदर एक समय में 180 कारें मुसाफ़िरों के साथ बोर्ड (BORD) की जाती हैं। क़ाफ़ला की गाड़ियां पहली मंज़िल पर बोर्ड हुईं।

ट्रेन 12 बज कर 50 मिनट पर 140 किलो मीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से फ्रांस के तटीय शहर CALAIS के लिए रवाना हुई। इस सुरंग की कुल लंबाई लगभग 31 मील है और इसमें से 24 मील का हिस्सा समुंद्र के नीचे है।

इस सुरंग (TUNNEL) का सबसे गहरा हिस्सा समुंद्र की सतह से 75 मीटर अर्थात 250 फुट नीचे है। अब तक किसी समुंद्र के नीचे बनने वाली टनल में से यह दुनिया की सबसे बड़ी टनल है।

12 बजकर 50 मिनट पर ट्रेन रवाना हुई और लगभग आधा घंटा की यात्रा के बाद फ्रांस के स्थानीय समय के अनुसार दो बजकर बीस मिनट पर फ्रांस के शहर CALAIS पहुंचीं। (फ्रांस का समय बर्तानिया के समय से एक घंटा आगे है।) ट्रेन के रुकने के बाद लगभग पाँच मिनट के समय से गाड़ियां ट्रेन से बाहर आईं और Motorway पर यात्रा शुरू हुई।

पहले से निर्धारित प्रोग्राम के अनुसार यहां से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक पैट्रोल पंप के पार्किंग एरिया में जमाअत जर्मनी से आए हुए दल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का स्वागत करना था और इसी क्षेत्र के एक रेस्टोरेंट में मध्याह्न के खाने का भी प्रबन्ध किया गया था।

जूंही हुज़ूर अनवर की गाड़ी इस पार्किंग एरिया में पहुंची तो आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब अमीर जमाअत जर्मनी, आदरणीय हैदर अली ज़फ़र साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी, आदरणीय मुहम्मद इलयास मजोका साहिब जनरल सेक्रेटरी तथा अफ़्सर जलसा सालाना जर्मनी, आदरणीय जरी उल्लाह साहिब मुबल्लिग़ जर्मनी , आदरणीय यहया ज़ाहिद साहिब असिस्टेंट जनरल सेक्रेटरी, आदरणीय हसनात अहमद साहिब सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी, आदरणीय डाक्टर अतहर जुबैर साहिब, आदरणीय अब्दुल्लाह सपरा साहिब और आदरणीय फ़ैज़ान अहमद साहिब इंचार्ज हिफ़ाज़ते ख़ास ने अपने ख़ुद्दाम की सिक्योरिटी टीम के साथ अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया और स्वागतम कहा।

यहां से खाने इत्यादि खाने के बाद तीन बजकर 45 मिनट पर बेल्जियम और जर्मनी के बॉर्डर पर आबाद शहर आकिन (AACHEN) के लिए चले। आज फ्रैंकफ़र्ट जाते हुए यहां रास्ता में रुक कर नई बनने वाली मस्जिद "मस्जिद मंसूर" के उद्घाटन का प्रोग्राम था।

यहां CALAIS से आकिन शहर(AACHEN) की दूरी 347 किलोमीटर है 55 किलोमीटर का दूरी तै करने के बाद फ्रांस का बॉर्डर क्रास करके मुल्क बेल्जियम की सीमा में दाख़िल हुए और मज़ीद 278 किलोमीटर की यात्रा बेल्जियम में तै करने के बाद सवा छः बजे बेल्जियम का बॉर्डर क्रास कर के जर्मनी की सीमा में दाख़िल हुए। यहां से दस मिनट की दूरी के बाद आकिन का शहर आ जाता है। यहां पहले से निर्धारित प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए आदरणीय सिद्दीक़ अहमद डोगर साहिब के घर तशरीफ़ ले गए। सिद्दीक़ अहमद डोगर साहिब जमाअत के इंतिहाई मुख़लिस और फ़िदाई कार्यकर्ता हैं और जमाअत आकिन के पुराने, आरम्भिक सदस्यों में से हैं और यहां जमाअत की बुनियाद, और क़ियाम और आरम्भिक सेटअप में उनका बड़ा हिस्सा है। वह स्वयं जमाअत के आरम्भिक सदर भी हैं।

यहां से छः बजकर 45 मिनट पर मस्जिद मंसूर आकिन के लिए रवानगी हुई। पुलिस की गाड़ी ने क़ाफ़ला को ESCORT किया। सात बजे जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की "मस्जिद मंसूर" में तशरीफ़ आवरी हुई तो जमाअत के लोग की एक बड़ी संख्या पुरुष तथा महिलाएं और बच्चों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़े जोश के साथ स्वागत किया और अपने हाथ हिलाते हुए अपने प्यारे आक़ा को स्वागतम कहा और बच्चों और बच्चियों ने स्वागत के गीत गाए।

इस अवसर पर सदर जमाअत आकिन आदरणीय बशीर अहमद डोगर साहिब ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश आमदीद कहते हुए हाथ मिलाने का सोभाग्य प्राप्त किया।

आज मस्जिद के उद्घाटन समारोह में शामिल होने के लिए आने वाले मेहमानों में से मेयर MARCEL PHILIPP ज़िला मेंबर पार्लियामेंट HON. SCHULTHEIS KARLऔर शहर आकिन के पार्लियामेंट मेंबर JANSEN BJORN ने भी हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और स्वागतम कहा हाथ मिलाने का सौभाग्य पाया।

शहर आकिन के एक कलब के आठ घुड़सवार अपने विशेष कपड़ों में घोड़ों

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बू अय्यूब अंसारी के हक़ में दुआ फ़रमाई कि

اَللّٰھُمَّ احْفَظْ اَبَا اَیُّوْبَ کَمَا بَاتَ یَحْفَظُنِیْکَ

हे अल्लाह अब्बू अय्यूब की सुरक्षा फ़र्मा जिस तरह उसने पूरी रात मेरी सुरक्षा करते गुज़ारी।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबा

हज़रत औफ़ बिन हारिस बिन रफ़अ अंसारी और हज़रत ख़ालिद (अबू अय्यूब अंसारी रज़ि अल्लाह तआला अन्हुमा के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन)

मेरी उम्मत उस समय तक ख़ैर पर बाक़ी रहेगी या यह फ़रमाया कि फ़ितरत पर क़ायम रहेगी जब तक वह मग़रिब में देरी न करें यहां तक कि सितारे चमकने लगें

चार मरहूमीन श्रीमान अब्दुल हई मंडल साहिब मुअल्लिम सिल्सिला (भारत), श्रीमान सिराज-उल-इस्लाम साहिब मुअल्लिम सिल्सिला ज़िला मुर्शिदाबाद बंगाल(भारत) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के नवासे श्रीमान शाहिद अहमद ख़ान पाशा साहिब और श्रीमान सय्यद मसऊद अहमद शाह साहिब शेफ़ील्ड (यू.के का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 नवम्बर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबी का पहले वर्णन होगा उनका नाम है हज़रत औफ़ बिन हारिस बिन राफे अन्सारी। रिवायतों में आपका नाम औफ़ बिन हारिस और औफ़ बिन अफरा वर्णन हुआ है। अफरा आप की माता का नाम था। आपका संबंध अन्सार के क़बीला बनू नज्जार से था। हज़रत माअज़ और हज़रत माउज़ हज़रत ओफ़ के भाई थे। हज़रत औफ़ अन्सार के उन छः लोगों में शामिल थे जिन्हों ने सबसे पहले मक्का आकर बैअत की। आप बेअत उक़बा में भी शामिल थे। जब आप ने इस्लाम स्वीकार किया तो हज़रत असअद बिन ज़ुरराह और हज़रत अम्मारह बिन हज़म के साथ मिलकर बनू मालिक बिन नज्जार के बुत तोड़े। जंगे बदर के दिन जब जंग जारी थी तो हज़रत औफ़ बिन अफ़रा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अल्लाह तआला अपने बंदे की किस बात से अधिक ख़ुश होता है। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस बात से कि उस का हाथ जंग में व्यस्त हो और कवच के बग़ैर निडर होकर लड़ रहा हो। अर्थात यदि जंग के मैदान में है तो फिर निडर होना चाहिए। इस पर हज़रत औफ़ बिन अफ़रा ने अपनी ढाल उतार दी और आगे बढ़कर लड़ना शुरू कर दिया यहां तक कि शहीद हो गए। जंगे बदर में अबु जहल ने औफ़ बिन हारिस और आप के भाई हज़रत माऊज़ को शहीद किया था। हदीस और सीरत की कुतुब में जंगे बदर में अबु जहल पर आक्रमण करने वाले सहाबा के विभिन्न नाम मिलते हैं उनमें हज़रत औफ़ बिन अफरा का नाम भी आता है। यह पहले भी एक बार वर्णन कर चुका हूँ। सुन्न अबी दाऊद में है कि उनका नाम औफ़ बिन हारिस था ।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 373-375, 370 प्रकाशन दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990ई) (अल-असाबा, भाग 4 पृष्ठ 614-615 प्रकाशन दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995-ई-)(अल-इस्तेयाब, भाग3 पृष्ठ 1225-1226 प्रकाशनदारुल जलील बेरूत 1992 ई-)(सही बुख़ारी, किताबुल -मग़ाज़ी, बाब फज़ल मिन शाहदे बदरन, हदीस 3988) (सही बुख़ारी ,किताब फ़र्ज़ अलखुमस, बाब अल इस्लाब ..... हदीस 3141) (सही बुख़ारी, किताबुल -मग़ाज़ी, बाब वध अबी जहल, हदीस 3963) (सुंन अबी दाऊद, किताब उल-जिहाद, बाब फ़ील असीर यूसक हदीस 2680)

सामान्यतः ये दोनों नाम उनके बोले जाते हैं। बहरहाल ये अबुजहल के वध में भी शरीक थे और उनकी शहादत बदर में हुई।

अगले सहाबी जिन का वर्णन है वह हैं। हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी का नाम हज़रत ख़ालिद और उनके पिता का नाम ज़ैद बिन कुलेब था।

(उसुदुल ग़ाबा, भाग 6 पृष्ठ 22 हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2003)

आप आपने नाम और उपनाम दोनों से प्रसिद्ध हैं। हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी का संबंध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू नज्जार से था। हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी को उक़बा सानिया के अवसर पर सत्तर अन्सार के साथ बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी की माता का नाम हिन्दा पुत्री सईद था जबकि एक कथन के अनुसार उनका नाम ज़ोहरा बिन्त सअद था। हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी की पत्नी का नाम हज़रत उम्मे हसन पुत्री ज़ैद था। उनके बतन से एक लड़का अब्दुर्रहमान पैदा हुआ। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी और हज़रत मुसअब बिन उमैर के मध्य भाई चारा स्थापित फ़रमाया।

(अलअसबा, भाग 2 पृष्ठ 200 हज़रत ख़अलिद बिन ज़ैद, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995-ई) (अत्तबकातुल कुबरा,भाग 3 पृष्ठ 368-369 हज़रत अबु अय्यूब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिज्रत कर के मदीना तशरीफ़ लाए तो आप मस्जिद नब्वी और अपने घरों की तामीर तक हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी के घर में ठहरे रहे।

(उसुदुल ग़ाबा, भाग 6 पृष्ठ 23 हज़रत अब्बू अय्यूब दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2003-ई)

सीरत खातामन नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़ियाम की घटना को इस प्रकार वर्णन किया है कि ' 'बनुनज्जार में पहुंच कर फिर यह प्रश्न सामने था कि आप किस व्यक्ति के निकट मेहमान ठहरें। क़बीला का हर व्यक्ति इच्छामंद था कि उसी को यह गौरव प्राप्त हो, बल्कि कुछ लोग तो जोश मोहब्बत में आप की ऊंटनी की बागों पर हाथ डाल देते थे। इस हालत को देखकर आप ने फ़रमाया। ' 'मेरी ऊंटनी को छोड़ दो कि यह इस समय आदेशित है।'' अर्थात जहां ख़ुदा की इच्छा होगी वहां यह स्वयं बैठ जाएगी और यह कहते हुए आप ने भी इस की बागें ढीली छोड़ दें। ऊंटनी आगे बढ़ी और थोड़ी दूर धीरे धीरे चलती हुई जब उस जगह पहुंची जहां बाद में मस्जिद नब्वी और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कमरे बने हुए और जो उस समय मदीना के दो बच्चों की अपनी ज़मीन थी तो बैठ गई, लेकिन तुरन्त ही फिर उठी और आगे की ओर चलने लगी। परन्तु कुछ क़दम चल कर फिर लौट आई और उसी जगह जहां पहले बैठी थी पुनः बैठ गई। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया هٰذَا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ الْمَنْزِلُ अर्थात मालूम होता है कि ख़ुदा की मंशा में यही हमारी रहने का स्थान है और फिर ख़ुदा से दुआ मांगते हुए ऊंटनी से नीचे उतर आए और फ़रमाया कि अपने आदमीयों में से यहां से क़रीब तरीन घर किस है।'' अर्थात मुस्लमानों में से। ' 'अब्बू अय्यूब अन्सारी शीघ्र लपक कर आगे हो गए और वर्णन किया। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरा घर है और यह मेरा दरवाज़ा है। तशरीफ़ ले चलिए। आप ने फ़रमाया अच्छा जाओ और हमारे लिए कोई ठहरने की जगह तैयार करो।

अब्बू अय्यूब अन्सारी शीघ्र अपने घर को ठीक ठाक कर के आ गए और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके साथ अंदर तशरीफ़ ले गए। यह घर दो मंज़िला था।अबु अय्यूब चाहते थे कि आप ऊपर की मंज़िल में क़ियाम फ़रमाएं लेकिन आप ने इस विचार से कि मुलाक़ात के लिए आने जाने वाले लोगों को

आसानी रहे निचली मंज़िल को पसंद फ़रमाया और वहां ठहर गए। रात हुई तो अब्बू अय्यूब और उन की पत्नी को सारी रात इस विचार से नींद नहीं आई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नीचे हैं और हम आप के ऊपर हैं और अधिक संयोग यह हो गया कि रात को छत पर एक पानी का बर्तन टूट गया और अब्बू अय्यूब ने इस डर से कि पानी का कोई क़तरा नीचे न टपक जाए शीघ्रता से अपना लिहाफ़ पानी पर गिरा कर उसे ख़ुशक कर दिया। सुबह हुई तो वे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और बहुत ज़ोर देने से आप की सेवा में ऊपर की मंज़िल में तशरीफ़ ले जाने का निवेदन किया। आप ने पहले तो ताम्मुल किया, लेकिन अंतत: अब्बू अय्यूब के बार बार के निवेदन को देख कर तैयार हो गए। इस घर में आप ने सात माह तक या इब्ने इसहाक़ की रिवायत के अनुसार माह सिफ़र सन 2 हिज्री तक ठहरे रहे। जबकि जब तक मस्जिद नब्वी और इस के साथ वाले कमरे तैयार नहीं हो गए आप उसी जगह अर्थात हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी के स्थान में घर में ही रहते रहे। अब्बू अय्यूब आप की सेवा में खाना भिजवाते थे और फिर जो खाना बच कर आता था वे स्वयं खाते थे और मुहब्बत और श्रद्धा के कारण से उसी जगह उंगलियां डालते थे जहां से आप ने खाया होता था। दूसरे अस्हाब भी सामान्यत: आप की सेवा में खाना भेजा करते थे।''

(सीरत खातमुल अम्बिया, पृष्ठ 267-268)

इस घटना को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हो ने भी वर्णन फ़रमाया है। कुछ फ़िक़रे, कुछ बातें नई होती हैं इसलिए में ये भी सारा पढ़ देता हूँ। सामान्यत: तो वही घटना वर्णन हुई है लेकिन हज़रत मुस्लेह मौऊद का अपना एक अंदाज़ है। आप लिखते हैं कि

"जब आप मदीना में दाख़िल हुए हर व्यक्ति की यह इच्छा थी कि आप उस के घर में ठहरें। जिस जिस गली में से आप की ऊंटनी गुज़री थी उस गली के विभिन्न लोग अपने घरों के आगे खड़े हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्वागत करते थे और कहते थे हे रसूलुल्लाह! यह हमारा घर है और यह हमारा माल है और ये हमारी जानें हैं जो आपकी सेवा के लिए हाज़िर हैं। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हम आपकी सुरक्षा करने के काबिल हैं। आप हमारे ही पास ठहरें। कुछ लोग जोश में आगे बढ़ते और आपकी ऊंटनी की बाग पकड़ लेते ताकि आपको अपने घर में उतरवा लें परन्तु आप हर एक व्यक्ति को यही उत्तर देते थे कि मेरी ऊंटनी को छोड़ दो यह आज ख़ुदा तआला की ओर से आदेशित है। यह वहीं खड़ी होगी जहां ख़ुदा तआला की इच्छा होगी। आख़िर मदीना के एक किनारे पर बनू नज्जार के यतीमों की एक ज़मीन के पास जा कर ऊंटनी ठहर गई। आप ने फ़रमाया ख़ुदा तआला की यही इच्छा मालूम होती है कि हम यहां ठहरें। फिर फ़रमाया यह ज़मीन किस की है? ज़मीन कुछ यतीमों की थी। उनका वली आगे बढ़ा और उसने कहा या अल्लाह! यह अमुक अमुक यतीम की ज़मीन है और आप की सेवा के लिए हाज़िर है। आप ने फ़रमाया हम किसी का माल मुफ़्त नहीं ले सकते। आख़िर उस की क़ीमत निर्धारित की गई और आप ने उस जगह पर मस्जिद और अपने कमरे बनाने का निर्णय किया। इस के बाद फ़रमाया सबसे क़रीब घर किस का है? अब्बू अय्यूब अन्सारी आगे बढ़े और कहा हे रसूलुल्लाह मेरा घर सबसे क़रीब है और आपकी सेवा के लिए हाज़िर है। फ़रमाया अपने घर जाओ और हमारे लिए कोई कमरा तैयार करो।अबु अय्यूब का घर दो मंज़िला था। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए ऊपर की मंज़िल चुनी परन्तु आप ने इस विचार से कि मिलने वालों को कष्ट होगा निचली मंज़िल पसंद फ़रमाई।' हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि अन्सार को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से जो बहुत मुहब्बत पैदा हो गई थी इसका पता इस अवसर पर भी चलता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इसरार पर हज़रत अबु अय्यूब मान तो गए कि आप निचली मंज़िल में ठहरें लेकिन सारी रात पति पत्नी इस विचार से जागते रहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके नीचे सो रहे हैं फिर वे किस तरह इस बे-अदबी के करने वाले हो सकते हैं कि वे छत के ऊपर सोएँ।' यह मुहब्बत का एक इज़हार था। 'रात को एक बर्तन पानी का गिर गया तो इस विचार से कि छत के नीचे पानी ना टपक पड़े हज़रत अबु अय्यूब ने दौड़ कर अपना लिहाफ़ इस पानी पर डाल कर पानी की नमी को ख़ुशक किया। सुबह के समय फिर वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और सारे हालात वर्णन किए। जिस पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऊपर जाना स्वीकार फ़र्मा लिया। हज़रत अबु अय्यूब प्रतिदिन खाना तैयार करते और आपके पास भिजवाते। फिर जो आप का बचा हुआ खाना आता वह सारा घर खाता। कुछ दिनों के बाद बार बार के निवेदन के साथ बाक़ी अन्सार ने भी मेहमान नवाज़ी में अपना हिस्सा मांगा और जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अपने घर का प्रबन्ध न हो गया बारी बारी मदीना के मुस्लमान आपके घर में खाना पहुँचाते रहे।''

(दीबाचा तफ़सीर उल-क़ुरआन, अनवारुल ऊलूम, भाग 20 पृष्ठ 228-229)

यह हज़रत मुस्लेह मौऊद का दीबाचे से जो वर्णन था वह ख़त्म हुआ। आगे यह हदीस की रिवायत है।

हज़रत अबु अय्यूब रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके पास उतरे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निचली मंज़िल में और हज़रत अब्बू अय्यूब ऊपर वाली मंज़िल में थे। रावी कहते हैं कि एक रात हज़रत अब्बू अय्यूब बेदार हुए और कहा हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऊपर चलते हैं अत: वे एक ओर हट गए और एक कोने में रात गुज़ारी। फिर उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में वर्णन किया तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया निचले हिस्सा में अधिक सहूलत है। उन्होंने कहा में उस छत पर नहीं रह सकता जिसके नीचे आप हों। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऊपर स्थनांतरित हो गए और हज़रत अब्बू अय्यूब नीचे। वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए खाना बनाते थे और जब वह खाना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से उनके पास वापिस लाया जाता तो वह लाने वाले से पूछते कि किस जगह आपकी उंगलियां लगी थीं। फिर वह आपकी उंगलियों की जगह का अनुसरण करते अर्थात वहीं से खाते जहां आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खाया था। उन्होंने एक बार आप के लिए खाना तैयार किया जिसमें लहसुन था। जब वो उनकी ओर वापस लाया गया तो उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उंगलियों की जगह के सम्बन्ध में पूछा और उनसे कहा कि क्या आपने नहीं खाया? जब उनको बताया गया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आज खाना नहीं खाया तो घबरा गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ऊपर गए और पूछा कि क्या यह लहसुन हराम है? नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं लेकिन मैं उसे नापसंद करता हूँ। इस पर अब्बू अय्यूब अन्सारी ने कहा जिस को आप नापसंद करते हैं मैं उसको नापसंद करता हूँ या उन्होंने कहा कि जिसको आपने नापसंद क्या मैंने भी नापसंद किया। रावी कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास फ़रिश्ते आते थे। यह रिवायत मुस्लिम की है। इसी तरह लिखी है अर्थात वह्यी होती थी और फ़रिश्ते आते थे और इस वजह से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बू वाली चीज़ पसंद नहीं करते थे लेकिन यह हराम नहीं है।

मुस्लिम में यह रिवायत इस प्रकार भी दर्ज है। हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी से रिवायत है। वह कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास खाना पेश किया जाता आप उस में से खाया करते और अपना बचा हुआ खाना मेरी ओर भेज देते। एक दिन आपने बचा हुआ खाना भेजा जिसमें से आपने नहीं खाया था क्योंकि उसमें लहसुन था मैंने आपकी सेवा में वर्णन किया कि क्या ये हराम है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि नहीं लेकिन में इस की बू के कारण से उसे नापसंद करता हूँ तो अब्बू अय्यूब ने वर्णन किया कि में भी नापसंद करता हूँ जो आप नापसंद फ़रमाते हैं।

(सही मुस्लिम, किताबुल इश्तेराब, विषय इबाह अकुल सोम ... हदीस 5356 ता5358)

एक दूसरी रिवायत में जो मस्नद अहमद बिन हम्बल की है, यह घटना इस प्रकार वर्णन हुई है। अब्बू अय्यूब अन्सारी से वर्णित है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे घर की निचली मंज़िल में ठहरे हुए और मैं ऊपर के कमरे में था। एक बार ऊपर के कमरे में पानी गिर गया तो मैं और उम्मे अय्यूब एक चादर लेकर पानी ख़ुशक करने लगे इस डर से कि वहां पानी टपक कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर न गिरने लगे। फिर मैं डरता डरता नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और वर्णन किया कि हे रसूलुल्लाह हमारे लिए उचित नहीं कि हम आप के ऊपर रहें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऊपर के कमरे में स्थनांतरित हो जाएं। इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद पर आप का सामान ऊपर के कमरे में स्थनांतरित कर दिया गया और आप का सामान बहुत ही थोड़ा था। फिर मैंने वर्णन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! जब आप मुझे खाना भेजते तो मैं जायज़ा लेता हूँ और जहां आपकी उंगलीयों के निशान देखता हूँ मैं अपना हाथ वहीं रखता हूँ लेकिन

आज जो खाना आपने मुझे भेजा है उसे जब मैं ने देखा तो मुझे आपकी उंगलियों के निशान इस में नज़र नहीं आए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह बात सही है। दरअसल इस में प्याज़ था। यहां लहसुन के स्थान पर प्याज़ का वर्णन हुआ है। मैंने नापसंद किया कि उसे खाऊं उस फ़रिश्ते के कारण से जो मेरे पास आता है। जबकि तुम लोग उसे खाओ।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 7 पृष्ठ 781 हदीस 23966 मस्नद अब्बू अय्यूब अन्सारी प्रकाशन आलेमुल क़ुतुब बेरूत लबनान 1998 ई)

हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंगे बदर, जंगे उहद और जंगे ख़ंदक़ के साथ समस्त जंगों में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद, भाग 3, पृष्ठ 369 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी वर्णन करते हैं कि हम ने बदर के दिन सफ़ें बनाई तो हम में से कुछ लोग सफ़ से आगे निकल गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन लोगों की ओर देखकर फ़रमाया ' 'मेरे साथ, मेरे साथ।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल, भाग 7 पृष्ठ 780 मस्नद अब्बू अय्यूब अल-अन्सारी, हदीस नंबर 23963 अलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998-ई अर्थात मेरे पीछे रहो। मेरे से आगे ना निकलो।

हज़रत सफिया की विदाई की रात का वर्णन है। जबकि यह पहले एक वर्णन में थोड़ा वर्णन कर चुका हूँ लेकिन पुन: वर्णन कर देता हूँ। जब हज़रत सफिया की विदाई हुई तो उस रात हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तम्बू के बाहर नंगी तलवार लिए सारी रात पहरा देते रहे और तम्बू के चारों ओर घूमते रहे। जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बू अय्यूब को तम्बू के बाहर देखा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया हे अब्बू अय्यूब क्या बात है? उन्होंने वर्णन किया हे रसूलुल्लाह मैं उस औरत से आपके सम्बन्ध में भयभीत हुआ क्योंकि उस का बाप और उसका पति और उसकी क़ौम के लोग मारे गए हैं और यह कुफ्र से नई-नई निकली है। इसलिए मैं रात-भर आप की सुरक्षा के विचार से पहरा देता रहा। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी के हक़ में दुआ फ़रमाई कि

اَللّٰھُمَّ احْفَظْ اَبَا اَیُّوْبَ کَمَا بَاتَ یَحْفَظُنِیْ

हे अल्लाह! अब्बू अय्यूब की हिफाज़त फ़र्मा जिस तरह उसने पूरी रात मेरी सुरक्षा करते हुए गुज़ारी। इमाम सुहेली कहते हैं इसलिए अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस दुआ के अनुसार हज़रत अबु अय्यूब की सुरक्षा फ़रमाई यहां तक कि रूमी आप की क़ब्र की सुरक्षा करते और वह आपके माध्यम से पानी मांगते तो बारिश होती।

(अल सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 65 ग़ज़वा ख़ैबर, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान)

हज़रत महमूद कहते हैं कि उन्होंने हज़रत इत्बान बिन मालिक अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु से सुना और वह उन लोगों में से थे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंगे बदर में मौजूद थे। कहते थे कि मैं अपनी क़ौम बनुसालिम को नमाज़ पढ़ाया करता था और मेरे और उनके मध्य नाला था। जब बारिशें होतीं तो उनकी मस्जिद की ओर पार करके जाना मेरे लिए मुश्किल होता। इसलिए मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और मैं ने आप से वर्णन किया कि मैं अपनी नज़र को कमज़ोर पाता हूँ और वह नाला जो मेरे और मेरी क़ौम के मध्य है जब बारिशें आती हैं बहने लगता है और वह मेरे लिए पार करना मुश्किल हो जाता है। इसलिए मेरी इच्छा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आएं और मेरे घर में ऐसी जगह नमाज़ पढ़ें जिसे में नमाज़ की जगह बना लूं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं आऊँगा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दिन चढ़े मेरे पास आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंदर आने की आज्ञा चाही। मैंने आज्ञा दी। आप बेठे नहीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपने घर में से आप कौन सी जगह पसंद करते हैं कि मैं वहां नमाज़ पढ़ूं? आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा कि तुमने नमाज़ पढ़ने के लिए बुलाया था तो कौन सी जगह है जहां तुम चाहते हो कि मैं नमाज़ पढ़ूं? मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उस जगह की ओर इशारा किया जहां मैं चाहता था कि आप नमाज़ पढ़ें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हो गए और अल्लाहु-अकबर कहा और हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे सफ़ बाँधी। आप ने दो रकअते पढ़ाई। फिर सलाम फेरा और जिस समय आप ने सलाम फेरा हमने भी सलाम फेरा और मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ज़ीराह अर्थात गोश्त और आटे का एक खाना है वह खाने के लिए रोक लिया जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लिए तैयार हो रहा था। मुहल्ले वालों ने सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे घर में हैं तो उनमें से कुछ लोग भागे आए यहां तक कि घर में बहुत से आदमी हो गए। उनमें से एक आदमी ने कहा मालिक कहाँ है मैं उसे नहीं देखता। तो किसी ने कहा वो मुनाफ़िक़ है। एक और सहाबी के बारे में पूछा कि वह कहाँ है? उन्होंने कहा कि वह तो मुनाफ़िक़ है। अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उसको मुहब्बत नहीं है इसलिए वह नहीं आया। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐसा मत कहो। क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि उसने لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ का इक़रार किया है। वह इस इक़रार से अल्लाह तआला की रजामंदी चाहता है। उसने कहा अल्लाह और उस का रसूल बेहतर जानते हैं। हम तो ख़ुदा की कसम उस की दोस्ती और उसकी बातें मुनाफ़िक़ों ही के साथ देखते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने आग उस व्यक्ति पर हराम कर दी है जिसने لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ का इक़रार किया जिस से वह अल्लाह तआला की रजामंदी चाहता हो। हज़रत महमूद बिन रबी कहते थे कि मैंने ये बात कुछ और लोगों से वर्णन की जिनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी भी थे। वह उस जंग में थे जिस में वह मुल्क-ए-रुम में फ़ौत हुए और यज़ीद बिन मुआवीया उनके सरदार थे। तो हज़रत अब्बू अय्यूब ने मेरी बात का इन्कार किया और कहा कि ख़ुदा की कसम मैं नहीं समझता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी ऐसा कहा हो जो तुम ने वर्णन किया है। अर्थात कि आग उस पर हराम हुई जो केवल لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहे। बहरहाल कहते हैं कि ये बात मुझ पर बहुत विचित्र गुज़री। मैं इस बात से बड़ा परेशान था। मैंने अल्लाह तआला के लिए अपने ऊपर एक मन्नत मानी कि यदि अल्लाह तआला ने मुझे सलामत रखा और इस जंग से वापस लौटा तो ये बात में हज़रत इतबान बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछूँगा बशर्ति के मैंने उनकी क़ौम की मस्जिद में उनको ज़िंदा पाया। इसलिए मैं लौटा और हज या उमरा का एहराम बाँधा। फिर में चल पड़ा यहां तक कि मदीना आया और बनू सालिम के मुहल्ले में गया तो मैं क्या देखता हूँ कि हज़रत इतबां बूढ़े हो गए हैं और आपकी देखने की शक्ति जाती रही है। आप अपनी क़ौम को नमाज़ पढ़ा रहे थे। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर उन्होंने सलाम फेरा तो मैंने उन्हें सलाम किया और उन्हें बताया कि मैं कौन हूँ। फिर मैंने उनसे वह बात पूछी तो उन्होंने उस को उसी तरह वर्णन किया जिस तरह कि पहली बार मुझ से वर्णन किया था।

(सही बुख़ारी, किताबुल तहज्जुद, विषय सलात अन्नाविफिले जमाअत, रिवायत नंबर1186) (लुग़ात अलहदीस ,भाग प्रथम, पृष्ठ580)

कि हाँ ये ठीक है। मैंने स्वयं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि जिसने لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ पढ़ा उस पर आग हराम हो गई लेकिन हज़रत अब्बू अय्यूब इस को नहीं मानते थे । इस पर हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने भी अपनी राय लिखी है कि हदीस में यही आता है कि مَنْ قَالَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ یَبْتَغِیْ بِذٰلِکَ وَجْہَ اللّٰہ

इस पूरी हदीस का अनुवाद पढ़ देता हूँ। इस में यह भी वज़ाहत आ जाएगी। अर्थात महमूद बिन रबी रिवायत करते हैं कि मैंने इतबान बिन मालिक से यह सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि अल्लाह तआला ने हर उस व्यक्ति पर दोज़ख़ की आग हराम कर दी हुई है जो सच्ची नीयत से ख़ुदा की रज़ा के लिए لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ का इक़रार करता है लेकिन जब मैंने यह रिवायत एक ऐसी मज्लिस में वर्णन की जिस में अब्बू अय्यूब अन्सारी सहाबी भी मौजूद थे तो अबु अय्यूब ने इस रिवायत से इन्कार किया और कहा ख़ुदा की क़सम मैं कदापि नहीं विचार कर सकता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये बात फ़रमाई हो। फिर आगे मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब यह लिखते हैं कि इस हदीस में हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी ने एक ऐसी हदीस को जो उसूल रिवायत के दृष्टि से सही थी। जो हदीस वर्णन करने के रिवायत के उसूल हैं इस दृष्टि से सही थी। लेकिन हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी ने अपनी दिराएत की बुनियाद पर अर्थात अपनी समझ और अपनी दृष्टि से जिसको वह सही समझते थे उस को बुनियाद रखकर स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और फिर मियाँ बशीर अहमद साहिब यह फ़रमाते हैं कि

मानो संभव है कि हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी का इस्तिदलाल सही न हो परन्तु बहरहाल यह हदीस इस बात को साबित करती है। अब यह बात हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब साबित करना चाहते हैं कि सहाबा यूंही हर हदीस को, बात को नहीं मान लिया करते थे बल्कि वे भी ग़ौर करते थे, तहक़ीक़ करते थे। तो वह लिखते हैं कि ' 'बहरहाल यह हदीस इस बात को साबित करती है कि सहाबा यूंही बिना सोचे समझे हर रिवायत को स्वीकार नहीं कर लेते थे' बल्कि दिरायत और रिवायत हर दो के उसूल के अधीन पूरी तहक़ीक़ कर लेने के बाद स्वीकार करते थे।

(उद्धरित सीरत खातामन नबिय्यीन ,पृष्ठ16)

बुख़ारी की इस हदीस की शरह में हज़रत सय्यद वली उल्लाह शाह साहिब ने लिखा है कि हज़रत महमूद बिन रबीइ से जब उन्होंने अर्थात अब्बू अय्यूब अन्सारी ने यह रिवायत सुनी तो उन्होंने इन्कार किया। कुछ का विचार है कि उनके इन्कार का कारण यह था कि केवल لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰه का इक़रार आग से सुरक्षित नहीं रख सकता जब तक पवित्र कर्म उस के साथ न हों। यह प्रमाणित इस्लामी मसला है। ठीक है। बिल्कुल इसी तरह होता है फिर आगे शाह साहिब लिखते हैं कि परन्तु يَبْتَغِىْ بِذٰلِكَ وَجْهَ اللّٰهِ का वाक्य बता रहा है कि यह इक़रार तौहीद किस प्रकार का है। अर्थात जो ह्रदय से चाहते हुए ख़ुदा की रज़ा की के लिए कलमा पढ़ता है لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहता है उसके लिए आग हराम है। तो फिर शाह साहिब लिखते हैं कि हज़रत महमूद ने पुन: तहक़ीक़ इस विचार से की कि शायद वह कुछ शब्द सुन न सके हों और फिर जो पुन: तहक़ीक़ की तो पुन: यही साबित हुआ कि वह शब्द सही थे जो रिवायत थी। फिर आगे लिखते हैं कि किसी के ईमान या निफ़ाक़ के सम्बन्ध में लोगों के सामने इज़हार-ए-राय ठीक नहीं है। किसी को यह कह देना कि मुनाफ़िक़ है या उस का ईमान कमज़ोर है यह ग़लत चीज़ है क्योंकि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस अवसर पर इब्ने दुखशुन के सम्बन्ध में आलोचना नापसंद फ़रमाई थी। आपने नापसंद फ़रमाया कि इस तरह पब्लिक में कहा जाए। इस किस्म की आलोचना सुधार के स्थान पर झगड़े उपद्रव का कारण हो जाती है।

(उद्धरित सही अल बुखारी, किताबुल तहज्जुद, बाब सलातुल नावाफिल जमाअत, हदीस 1186 भाग 2 पृष्ठ 565 अज़ निज़ारत इशाअत रब्वाह)

एक रिवायत में वर्णन है कि हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत मिस्वर बिन मखर्म: ने अब्व: के स्थान पर मसला ग़ुसल में मतभेद किया। हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास ने कहा मुहरम अपना सिर धो सकता है और हज़रत मुसव्विर ने कहा कि मुहरम अपना सिर नहीं धो सकता। रावी कहते हैं कि हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास ने मुझे हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी के पास भेजा। मैंने उन्हें दो लक्कड़ीयों के मध्य नहाते हुए पाया। इन पर कपड़े से पर्दा किया गया था। मैंने उनको अस्सलामु अलैकुम कहा तो उन्होंने फ़रमाया कौन है? मैंने कहा अबदुल्लाह बिन हुनैन। हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास ने मुझे आप के पास भेजा है कि मैं आपसे पूछूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपना सिर किस तरह धोते थे जबकि आप एहराम की हालत में होते थे क्योंकि कहते हैं कि एहराम बाँधा हो तो सिर नहीं धोना चाहिए। तो हज़रत अब्बू अय्यूब ने अपना हाथ कपड़े पर रखा, उसे नीचे झुकाया यहां तक कि उनका सिर मुझे नज़र आया अर्थात वह स्क्रीन जो बनाई हुई थी जिसके आप पीछे थे उस को नीचे करके आपने मुझे अपना सिर दिखाया। फिर उन्होंने एक आदमी से कहा जो उन पर पानी डाल रहा था कि पानी डालो तो उसने उनके सिर पर पानी डाला। फिर उन्होंने अपने दोनों हाथों से अपने सिर को मला, हाथों को आगे लाए और पीछे ले गए और कहा कि इस तरह मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को करते देखा है।

(सही बुख़ारी, किताब जज़ा-ए-अलसीद ,विषय अल इग्तेसाल लिल्-मुहरम, नंबर 1840)

एक बार आगे फिर पीछे ले गए सिर धोते हुए।

हज़रत सईद बिन मुसय्यब वर्णन करते हैं कि एक बार हज़रत अब्बू अय्यूब ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र बालों में कोई चीज़ तिनका इत्यादि देखा तो उन्होंने उसे अलग कर दिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दिखाया। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अब्बू अय्यूब से अल्लाह वह चीज़ दूर करे जिसे वह नापसंद करता है। एक रिवायत में है कि आप ने फ़रमाया हे अब्बू अय्यूब तुम्हें कष्ट न पहुंचे। (कन्जुल अम्माल जिल्द 13 पृष्ठ 614 हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु, हदीस नंबर37568 -37569 प्रकाशन मोससा अलर्साला 1985 ई)

हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी जंग जमल और जंग सिफ़्फ़ीन और जंग नहरवान में हज़रत अली रज़ि के लश्कर के आगे वाले हिस्सा में शामिल थे।

(उसुदुल गाबा, भाग 6 पृष्ठ 22 हज़रत अबु अय्यूब अन्सारी दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2003 ई)

हज़रत अली को हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी की ज़ात पर जो भरोसा था वह इस बात से ज़ाहिर होता है कि जब हज़रत अली ने कूफ़ा को अपनी राजधानी क़रार दिया और वहां स्थानांतरित हो गए तो हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी को मदीना का गवर्नर बना दिया और वह चालीस हिज्री तक मदीना के गवर्नर रहे यहां तक कि बुसर बिन अबू अर्तात के नेतृत्व में अमीर मुआविया की शामी फ़ौज ने मदीना पर आक्रमण किया तो उस समय हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी मदीना छोड़कर हज़रत अली के पास कूफ़ा चले गए। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सहाबा किराम को दरबारे ख़िलाफ़त से मासिक वज़ीफ़े मिलते थे। हज़रत अबु अय्यूब का वज़ीफ़ा पहले चार हज़ार था। हज़रत अली ने अपने ज़माना ख़िलाफ़त में बीस हज़ार कर दिया। पहले आठ ग़ुलाम उनकी ज़मीन की खेती के लिए निर्धारित थे हज़रत अली ने चालीस ग़ुलाम कर दिए।

(तारीख़ तिब्री भाग 3 पृष्ठ 153 सुम्मा दख़लतू सुन्नता अर्बईन..... दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1987 ई) (उद्धरित सैरुस्सहाब:, भाग 3 पृष्ठ 112 दारुल -इशाअत कराची2004-ई)

हज़रत हबीब बिन अब्बू सअबित से रिवायत है कि हज़रत अबु अय्यूब अमीर मआविया के पास आए और उनसे अपने ऊपर क़र्ज़ की शिकायत की तो उन्होंने वह न देखा जो वो पसंद करते थे और उन्होंने वह देखा जिसे वह नापसंद करते थे। अर्थात हज़रत अब्बू अय्यूब की बात को नहीं देखा बल्कि उनकी नापसंदीदगी वाली बात को देखा। पसंद वाली बात को नहीं देखा। इस पर हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि तुम बाद में ज़रूर तर्जीह देखोगे अर्थात तुम्हारी तर्जीहात बदल जाएँगी। अमीर मुआवीया ने कहा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम लोगों को किस चीज़ का इरशाद फ़रमाया था। जब रसूल पाक ने यह कहा तो फिर आप ने क्या फ़रमाया था? हज़रत अबु अय्यूब ने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि तुम लोग सब्र करना जब ऐसी तर्जीहात बदल जाएं जहां तुम लोगों की बात न मानी जाए। जो पसंदीदा बात न सुनी जाए तो फिर सब्र करना। इस पर अमीर मुआवीया ने कहा फिर तुम लोग सब्र करो। जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सब्र करना तो फिर सब्र करो। हज़रत अबु अय्यूब ने कहा अल्लाह की क़सम! मैं तुमसे कभी किसी चीज़ का प्रश्न नहीं करूँगा। फिर हज़रत अब्बू अय्यूब बस्रा चले गए और हज़रत इब्ने अब्बास के पास ठहरे। हज़रत इब्ने अब्बास ने उन के लिए अपना घर ख़ाली किया और कहा मैं आपके साथ ज़रूर वैसा ही व्यवहार करूँगा जैसा आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ किया था। जब आपने रसूल अल्लाह की मेहमान-नवाज़ी की थी वैसी मेहमान-नवाज़ी मैं आपकी करूँगा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि ने अपने परिवार वालों को हुक्म दिया तो वे बाहर चले गए और हज़रत इब्ने अब्बास ने कहा घर में जो कुछ है वे सब आपका है और उन्होंने हज़रत अब्बू अय्यूब को चालीस हज़ार दिरहम और बीस ग़ुलाम दिए। उन्होंने अपना और इंतिज़ाम कर लिया और उनको न केवल घर दिया बल्कि चालीस हज़ार दिरहम भी दिए और बीस ग़ुलाम भी दिए।

(कंज़ुलअम्माल, भाग 13 पृष्ठ 614-615 हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु, हदीस नंबर 37570 मुस्सताअल रिसाला 1985ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हो

وَاَنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ وَاَحْسِنُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (अल्-बक़र:196)

की तफ़सीर में वर्णन करते हैं कि ' 'इस आयत का अर्थ समझने में लोगों को

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

बड़ी ग़लतफ़हमी हुई है।

وَاَنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْکُمْ اِلَی التَّھْلُکَۃِ وَاَحْسِنُوْا اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ۔''

उन्हें ख़ुदा तआला की राह में जहां कोई कष्ट होता है वह तुरंत कह देते हैं कि यह तो अपने आप को हलाकत में डालने वाली बात है।' क्योंकि अल्लाह तआला ने कहा है وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْکُمْ اِلَی التَّھْلُکَۃِ कि अपने आपको हलाकत में न डालो। ' 'हम इस में किस तरह हिस्सा ले सकते हैं हालाँकि उस के कदापि यह अर्थ नहीं कि जहां मौत का डर हो वहां से मुस्लमान को भाग जाना चाहिए और उसे कायरता दिखानी चाहिए बल्कि इस के अर्थ यह हैं कि जब दुश्मन से लड़ाईयां हो रही हो तो उस समय अपने मालों को ख़ूब ख़र्च करो। यदि तुम अपने अम्वाल को रोक लोगे तो अपने हाथों अपनी मौत का सामान पैदा करोगे। इसलिए अहादीस में हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी से वर्णित है कि उन्होंने उस समय जबकि वह क़ुस्तुनतुनिया फ़तह करने के लिए गए हुए थे कहा कि यह आयत हम अन्सार के बारे में नाज़िल हुई थी और फिर उन्होंने बताया कि पहले तो हम ख़ुदा तआला के रस्ता में अपने अम्वाल ख़र्च किया करते थे लेकिन जब ख़ुदा तआला ने अपने दीन को तक़वियत और सम्मान दिया और मुस्लमानों को विजय प्राप्त हुई तो

قُلْنَا ھَلْ نُقِیْمُ فِیْ اَمْوَالِنَا وَنُصْلِحُھَا

हमने कहा कि यदि अब हम अपने मालों की सुरक्षा करें और उसे जमा करें तो यह अच्छा होगा। उस समय यह आयत उत्तरी कि अल्लाह तआला के रास्ता में अपने अम्वाल ख़र्च करने से पीछे न हटो क्योंकि यदि तुम ऐसा करोगे तो इसका अर्थ यह होंगे कि तुम अपनी जानों को हलाकत में डालना चाहते हो। अत: अपने मालों को जमा न करो बल्कि उन्हें अल्लाह तआला के रस्ते में ख़ूब ख़र्च करो अन्यथा तुम्हारी जानें व्यर्थ चली जाएँगी। दुश्मन तुम पर चढ़ आएँगे और इस का नतीजा यह होगा कि तुम हलाक हो जाओगे।

(तफ़सीर कबीर, भाग 2 पृष्ठ 429)

हज़रत अली के बाद अमीर मुआवीया की हुकूमत का ज़माना आया। उक्बा बिन अमिर जुहेनी उनकी ओर से मिस्र के गवर्नर थे। हज़रत उक्बा के उह्द इमारत में हज़रत अब्बू अय्यूब को दो बार मिस्र की यात्रा का संयोग हुआ। प्रथम यात्रा हदीस के जानने के लिए थी, उन्हें मालूम हुआ था कि हज़रत उक़बा किसी ख़ास हदीस की रिवायत करते हैं। केवल एक हदीस के लिए हज़रत अब्बू अय्यूब ने बुढ़ापे में यात्रा की कठिनाई उठाई। दूसरी बार जंगे रुम में शिरकत के इरादे से मिस्र तशरीफ़ ले गए।

(उद्धरित सैरुस्सहाब, भाग 3 हिस्सा प्रथम, पृष्ठ113 दारुल-इशाअत कराची 2004ई)

मरवान जब मदीना का गवर्नर था वह एक दिन आया तो उसने एक व्यक्ति को देखा जिसने अपना चेहरा नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र पर लगाया हुआ था। मरवान ने कहा क्या तुम जानते हो कि तुम क्या कर रहे हो? यह शिर्क है। झुके हुए सजदा कर रहे हो। फिर मरवान उस व्यक्ति के पास आया तो क्या देखा कि वह हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी हैं। उन्होंने उत्तर दिया हाँ! मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया हूँ। इन पत्थरों के पास नहीं आया।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 7 पृष्ठ 785 मस्नद अब्बू अय्यूब अन्सारी, हदीस नंबर 23983 अलेमुल क़ुतुब बेरूत1998ई) (उद्धरित सैरुस्सहाब ,भाग 3 हिस्सा प्रथम, पृष्ठ 116 दारुल -इशाअत कराची 2004ई)

यहां अभिप्राय यह था कि मैं इस मुहब्बत और इश्क़ के कारण से झुका हुआ हूँ। पत्थरों को सिज्दा नहीं कर रहा। न मैं कोई शिर्क कर रहा हूँ बल्कि यह मुहब्बत का इज़हार है और इस में भी अल्लाह तआला का एकेश्वरवाद मेरे हृदय में है। शिर्क नहीं है।

अब्बू अब्दुर्रहमान हुबली से वर्णित है कि हम समुंद्र में थे और हम पर अब्दुल्लाह बिन क़ैस फ़ज़ारी अमीर था और हमारे साथ हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी भी थे। वह अम्वाल ग़नीमत बांटने वाले के पास से गुज़रे जो क़ैदियों की निगरानी कर रहा था। हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी क्या देखते हैं कि एक औरत रो रही है। उन्होंने पूछा उस औरत को क्या हुआ? लोगों ने बताया कि इस औरत को और उसके पुत्र को अलग कर दिया गया है। रावी कहते हैं इस पर उन्होंने बच्चे का हाथ पकड़ा और उसे उसकी माँ के हाथ में दे दिया। इसके बाद अम्वाल ग़नीमत बांटने वाला अब्दुल्लाह बिन क़ैस के पास गया और उन्हें यह सब बताया तो उन्होंने हज़रत अब्बू अय्यूब को बुला भेजा और पूछा आपने ऐसा क्यों किया? तो उन्होंने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि जिसने माँ और उसके पुत्र के मध्य जुदाई डाली तो अल्लाह तआला उसके और उसके प्यारों के मध्य क़यामत के दिन जुदाई डाल देगा।(मस्नद अहमद बिन हम्बल,भाग 7 पृष्ठ 764 मस्नद अब्बू अय्यूब अल-अन्सारी, हदीस नंबर 23895 अलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई)

अत: यह जो कुछ लोग माताओं से बच्चे छीन लेते हैं उन के लिए भी इस में शिक्षा है। फिर यह इस्लाम पर एतराज़ करने वाले देखें कि वह स्वयं क्या करते हैं। इस्लाम तो इस सीमा तक ख्याल रखता है। अब पिछले दिनों अमरीका की ही ख़बरें थीं कि वहां भी जो अप्रवासी (immigrants) आए हुए थे उन आने वालों को अलग अलग उन्होंने रख दिया। माताओं को अलग, बच्चों को अलग किया और कुछ बच्चे कुछ समय के बाद माओं को पहचान भी नहीं सके। बहरहाल इस्लाम इस हद तक आदेश देता है कि माताओं को बच्चों से अलग न करो। एक दूसरे को इस कारण से कष्ट न दो।

हज़रत मर्सद बिन अब्दुल्लाह वर्णन करते हैं कि जब हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी हमारे पास जिहाद की उद्देश्य से आए तो उन दिनों हज़रत उक़बा बिन आमर मिस्र के गवर्नर थे। उन्होंने मग़रिब की नमाज़ में देरी की। हज़रत अब्बू अय्यूब उनके पास गए और कहा हे उक़बा यह कैसी नमाज़ है? हज़रत उक़बा ने उत्तर दिया हम व्यस्त थे। हज़रत अब्बू अय्यूब ने कहा अल्लाह की क़सम! मेरा केवल यह उद्देश्य है कि लोग यह न समझ लें कि तुम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऐसे करते हुए देखा था। क्या तुम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए नहीं सुना कि मेरी उम्मत उस समय तक नेकी पर चलती रहेगी या यह फ़रमाया कि फ़ित्रत पर क़ायम रहेगी जब तक वह मग़रिब में देरी न करें यहां तक कि सितारे चमकने लेगें। (मस्नद अहमद बिन हम्बल, भाग 7 पृष्ठ 773 मस्नद अब्बू अय्यूब अल-अन्सारी, हदीस नंबर 23931 अलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई) अर्थात पहले समय में मग़रिब की नमाज़ पढ़नी चाहीए।

अब्बू वासिल से वर्णित है कि मैं हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी से मिला। उन्होंने मुझ से हाथ मिलाया और देखा कि मेरे नाख़ुन बहुत लंबे हैं तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में से कोई आसमान की ख़बरों के सम्बन्ध में प्रश्न करता है और वह अपने नाख़ुन इस तरह लंबे रखता है जैसे परिंदों के नाख़ुन होते हैं। उनमें जनाबत और गंदगी और मेल कुचैल इकट्ठी हो जाती है।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल, भाग 7 पृष्ठ 775 मस्नद अब्बू अय्यूब अल-अन्सारी, हदीस नंबर 23938 अलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई)

अर्थात बातें तो तुम लोग बड़ी ऊंची-ऊंची पूछते हो, मार्फ़त की करते हो लेकिन तुम्हारी अपनी हालत यह है कि नाख़ुन तुम्हारे लंबे हैं और उनमें गंद इकट्ठा हो जाता है इसलिए नाख़ुन काट के रखा करो। मस्नद अहमद बिन हम्बल की यह हदीस है।

हज़रत अब्बू अय्यूब का फ़ज़ल तथा कमाल इतना उच्च था कि स्वयं सहाबा उनसे मसले पूछा करते थे। हज़रत इब्ने अब्बास, इब्ने उम्र, बराअ बिन आज़िब, अनस बिन मालिक, अब्बू उमामाह, ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी, मिकदाम बिन मअदी, जाबिर बिन समुरह, अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ख़तमी इत्यादि जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शिक्षा पाए हुए थे हज़रत अब्बू अय्यूब के फ़ैज़ से वंचित नहीं थे। ताबेईन में सईद बिन मुसय्यब, उर्वाह बिन ज़ुबैर, सालिम बिन अब्दुल्लाह, अताअ बिन यसार, अताअ बिन यज़ीद लेसी, अबू सल्मा, अब्दुर्रहमान बिन अबी लेला बड़े उच्च स्तर के लोग हैं जबकि वे हज़रत अब्बू अय्यूब के इरादत मंदों में शामिल थे।

(उद्धरित सैरुस्सहाब, भाग 3 हिस्सा प्रथम, पृष्ठ115 दारुल -इशाअत कराची 2004 ई)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी से वर्णित है कि वह मुआवीया के ज़माने में जिहाद के लिए निकले। वह कहते हैं कि मैं बीमार हो गया। रोग में तीव्रता हो गई तो अपने साथियों से कहा कि यदि मैं मर जाऊं तो मुझे उठा लेना और जब तुम लोग दुश्मन के मुक़ाबले में डटे हुए हो तो मुझे अपने क़दमों के पास दफ़न कर देना। मैं तुम से एक हदीस वर्णन करूँगा जो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुनी है। यदि मेरा देहान्त क़रीब न होता तो मैं उसे वर्णन न करता। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि जो इस हालत में मरा कि उसने अल्लाह के साथ किसी को भी शरीक न ठहराया हो तो वह जन्नत में दाख़िल होगा।

एक रिवायत में वर्णित है कि जब हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी की वफ़ात का समय क़रीब आया तो उन्होंने कहा मैंने तुम लोगों से एक ऐसी चीज़ छुपाई हुई थी जो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुनी थी। आप ने फ़रमाया यदि तुम लोग गुनाह न करते तो अल्लाह तआला ऐसी क़ौम को पैदा करता जो गुनाह करती और फिर अल्लाह उसे बख़शश देता। अर्थात अल्लाह तआला अपनी रहमानियत और बख़शिश की सिफ़त का इस हद तक सम्मान करता है।

रावी मुहम्मद वर्णन करते हैं कि हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी जंगे बदर में शरीक हुए। आप मुस्लमानों की किसी लड़ाई में पीछे नहीं रहे सिवाए इस के कि आप किसी दूसरी लड़ाई में शामिल होते। अर्थात यदि एक समय में दो विभिन्न जंगे हो रही होतीं तो किसी न किसी जंग में लाज़िमी शामिल होते थे। केवल एक वर्ष वह लड़ाई में शामिल नहीं हुए क्योंकि लश्कर पर एक नौजवान सिपहसालार बना दिया गया था वह उस वर्ष बैठे रहे। उस वर्ष के बाद वह अफ़सोस करते और कहते कि मुझे इस बात से क्या मतलब कि मुझ पर कौन निगरान निर्धारित किया गया। मुझे इस बात से क्या मतलब कि मुझ पर कौन निगरान निर्धारित किया गया। मुझे इस बात से क्या मतलब कि मुझ पर कौन निगरान निर्धारित किया गया। तीन बार उन्होंने यह बात कही। वर्णन किया जाता है कि जिस जवान की इमारत का इस रिवायत में वर्णन किया गया है वह अब्दुल मालिक बिन मरवान था। रावी कहते हैं कि फिर हज़रत अब्बू अय्यूब बीमार हो गए। लश्कर पर यज़ीद बिन मुआवीया अमीर था। वह उनके पास उनकी अयादत को आया और पूछा कि आपकी कोई ज़रूरत हो तो वर्णन करें। उन्होंने कहा कि मेरी ज़रूरत यह है कि जब मैं मर जाऊं तो मुझे सवार करना। फिर जहां तक गुंजाइश मिले दुश्मन के मुल्क में ले जाना। फिर जब गुंजाइश न पाओ तो वहीं दफ़न कर देना और वापस आ जाना। जब हज़रत अब्बू अय्यूब की वफ़ात हो गई तो उसने उन्हें सवार किया और जहां तक गुंजाइश मिली वह दुश्मन के मुल्क में ले गया और उन्हें दफ़न किया। फिर वापस आ गया।

रावी कहते हैं कि हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी कहा करते थे कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّ ثِقَالً (अल्-तौब: 41) अर्थात निकल खड़े हो हल्के भी और भारी भी।

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّ ثِقَالً और मैं अपने आप को हल्का भी पाता हूँ और भारी भी। एक रिवायत में वर्णित है कि मक्का वालों में से किसी व्यक्ति से वर्णित है कि यज़ीद बिन मुआवीया जिस समय हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी के पास आया तो उन्होंने उससे कहा कि लोगों से मेरा सलाम कहना। वह मुझे लेकर चलें और जितना दूर वह मुझे ले जा सकते हैं ले जाएं तो यज़ीद ने लोगों को वह सब बताया जो हज़रत अब्बू अय्यूब ने उनसे कहा था। लोगों ने माना और उनके जनाज़े को जिस हद तक वे ले जा सकते थे ले गए।

हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद अपनी वफ़ात तक जिहाद से चिमटे रहे यहां तक कि उनकी वफ़ात क़ुस्तुनतुनिया में हुई। एक रिवायत में वर्णित है कि 52 हिज्री में यज़ीद बिन मुआवीया ने अपने पिता अमीर मुआवीया की ख़िलाफ़त में क़ुस्तुनतुनिया की जंग लड़ी। इसी वर्ष हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी की वफ़ात हुई। यज़ीद बिन मुआवीया ने उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाइ। उनकी क़ब्र रुम में क़िला क़ुस्तुनतुनिया के पास है। रावी कहते हैं कि मुझे मालूम हुआ कि रूमान वाले की उनकी क़ब्र की सुरक्षा और मुरम्मत करते हैं और अकाल के दिनों में वह आप के द्वारा पानी माँगा करते हैं। (अलतबकात भाग ला 3 पृष्ठ 369 370 प्रकाशन दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत1990 ई) (अलअसबा ,भाग 2 पृष्ठ 201 हज़रत ख़आलिद बिन यज़ीद, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995 ई)(मस्नद अहमद बिन हम्बल, भाग 7 पृष्ठ 768 मस्नद अब्बू अय्यूब अल-अन्सारी, हदीस नम्बर 23912 अलेमुल क़ुतुब बेरूत1998ई)

एक रिवायत के अनुसार हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी ने अमीर मुआवीया के समय में यज़ीद की कमान में रूमी हुकूमत के ख़िलाफ़ जंग में हिस्सा लिया और क़ुस्तुनतुनिया के शहर के पास 50 या 51 हिज्री में वफ़ात पाई और वहीं दफ़न हुए। एक रिवायत के अनुसार यज़ीद ने घुड़सवारों को हुक्म दिया जो हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी की क़ब्र पर आगे पीछे दौड़ते रहे यहां तक कि उनकी क़ब्र का निशान मिट गया। एक रिवायत में ये भी है कि जिस रात हज़रत अबु अय्यूब को दफ़न किया गया उस की सुबह रोमियों ने मुस्लमानों से पूछा तुम लोग रात को क्या करते रहे। मुस्लमानों ने बताया कि यह हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बड़े सहाबा में से थे और इस्लाम स्वीकार करने के दृष्टि से उन सबसे पहले थे। हमने उन्हें दफ़न किया जैसा कि तुम देख चुके हो और अल्लाह की क़सम यदि क़ब्र खोदी गई तो जब तक हमारे पास हुकूमत है, अरब की सरज़मीन में तुम्हारा यह नाक़ूस (बिगुल) नहीं बजेगा। मुजाहिद कहते हैं कि जब उनके हाँ अकाल पड़ता तो उनकी क़ब्र से थोड़ी सी मिट्टी हटाते तो बारिश हो जाती।

(उसुदुल गाबाह, भाग 6 पृष्ठ 23 हज़रत अबु अय्यूब अन्सारी दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2003ई)

यह वहां अब भी एक रिवायत क़ायम है। कहाँ तक सही है अल्लाह बेहतर जानता है। हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी पच्चास या इक्कावन हिज्री या बावन हिज्री में जंगे क़ुस्तुनतुनिया में फ़ौत हुए। अंतिम कथन अक्सर लोगों का है अर्थात बावन हिज्री का। (अलअसबा, भाग 2 पृष्ठ 201 हज़रत ख़अलिद बिन यज़ीद दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995 ई)

हज़रत अब्बू अय्यूब अन्सारी का मज़ार तुर्की के शहर इस्तंबूल में है। मज़ार एक चबूतरे में है जिसे पीतल के जालीदार दरवाज़ा से बंद किया हुआ है। तुर्की के अक्सर लोग मन की शान्ति के लिए यहां हाज़िर होते हैं।

(तबर्रुकात सहाबा का तस्वीरी एलबम लेखक अर्सलान बिन अख़तर 35-50 प्रकाशन अर्सलान कराची 2011 ई)

अब बदरी सहाबा का यह वर्णन तो ख़त्म हो गया लेकिन चारों खलीफ़ाओं का वर्णन इंशा अल्लाह वर्णन करूँगा। पहले कुछ का थोड़ा वर्णन हुआ था। अब विस्तार से वर्णन करूँगा। इसी तरह शुरू में कुछ सहाबा का थोड़ा वर्णन हुआ था यदि उनके बारे में कुछ और सामग्री उपलब्ध हुई तो वह भी वर्णन कर दूँगा। जब यह सब लिखा जाएगा तो वह इन सहाबा की जीवनी में उनके इस हिस्से में चला जाएगा और वे लोग कुछ एक ही होंगे।

अब कुछ मरहूमीन का मैं वर्णन करना चाहता हूँ जिन की पिछले दिनों वफ़ात हुई और नमाज़ों के बाद उनकी नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा। प्रथम श्रीमान अबदुल हई मंडल साहिब का है जो इंडिया के मुअल्लिम सिल्सिला हैं। 25 सितंबर 2020ई को हार्ट अटैक के कारण से 53 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे वा इन्ना इलैहि राजेउन

मरहूम ने साल 1999 ई में तहक़ीक़ कर के जमाअत में शामिल हुए थे। 2003 ई में जामिया से फ़ारिग़ होने के बाद देहान्त तक मेहनत और श्रद्धा और लगन से जमाअत की सेवा करते रहे। इस दृष्टि से मरहूम की सेवा 17 वर्ष बनती है। मरहूम बहुत अधिक मुख़लिस, धार्मिक, आज्ञाकारी, नमाज़ों के पाबन्द और सिल्सिला से प्रेम करने वाले मुअल्लिम थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त दो पुत्र और दो पुत्रियाँ शामिल हैं। अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए और उनकी पत्नी बच्चों को भी मन की शान्ति प्रदान फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीय सिराजुल इस्लाम साहिब मुअल्लिम सिल्सिला ज़िला मुर्शिदाबाद बंगाल का है जो 14 अक्तूबर 2020 ई को 60 वर्ष की उम्र में अनुसार वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे वा इन्ना इलैहि राजेऊन

मुअल्लिम साहिब मरहूम ने 2002ई में जामियातुल मुबश्रीन क़ादियान में छः माह की मुअल्लमीन की ट्रेनिंग प्राप्त की और 2020 ई तक बतौर आरज़ी बिल्मुक़ता

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

मुअल्लिम सेवा करते रहे। इस दृष्टि से मुअल्लिम साहिब मरहूम की सेवा अठारह वर्ष बनती है। मरहूम इंतिहाई मुख़लिस, दीन-दार, आज्ञाकारी, नमाज़ कुरआन के पाबन्द, सिल्सिला से प्रेम करने वाले मेहनती मुअल्लिम थे। मरहूम ने अपनी पत्नी के अतिरिक्त तीन पुत्रियाँ यादगार छोड़ी हैं। बड़ी दो पुत्रियों की शादी हो चुकी है। तीसरी पुत्री शिक्षा प्राप्त कर रही है। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए और उनके परिजनों को भी सब्र अता फ़रमा। नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

तीसरा जनाज़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नवासे और हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब के पोते, हज़रत नवाब अम्तुल-हफ़ीज़ बेग़म साहिबा और हज़रत नवाब अबदुल्लाह ख़ान साहब के पुत्र आदरणीय शाहिद अहमद ख़ान पाशा साहिब का है जो 26 अक्तूबर को 85 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। हस्पताल में थे। इन्ना लिल्लाहे वा इन्ना इलैहि राजेऊन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आप मूसी थे। आदरणीय शाहिद अहमद ख़ान साहब की दो शादियां हुई थीं। पहली शादी आदरणीया अम्तुल-शकूर साहिबा के साथ, जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की पुत्री थीं। उनसे 1962 ई में हुई और उनका निकाह हज़रत मुस्लेह मौऊद के रोग के कारण से मौलाना जल्लुद्दीन साहिब शम्स ने पढ़ा था। पहली शादी से उनके पाँच बच्चे हैं, दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ। दूसरी शादी उनकी समीना सईद साहिबा पुत्री सईद साहिब मरहूम से 1977 ई में हुई जिनसे उनका एक पुत्र है। वह आजकल अमरीका में है।

बाक़ायदा उनकी कोई जमाअत की सेवाएं तो नहीं हैं लेकिन हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह सालिसस के साथ कुछ बैरूनी दौरों में उनको जाने का अवसर मिला और वहां सेवा का उनको मौक़ा मिला। और इसी तरह दूसरी ख़ूबी उनकी यह भी है, उनकी पत्नी ने लिखा था कि बड़े गरीबों का ख्याल रखने वाले थे। बहुत से ग़रीबों को ख़र्च दिया करते थे बल्कि एक घर भी बना के दिया और बाक़ायदगी से ग़रीबों की सहायता करने वाले थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए। उनके बच्चों को भी जमाअत और ख़िलाफ़त से जोड़े रखे।

उगला जनाज़ा श्रीमान सय्यद मसऊद अहमद शाह साहिब शेफ़ील्ड यूके का है जो 8 सितंबर को हृदय की धड़कन बंद होने के कारण से वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे वा इन्ना इलिएही राजेउन

आप के वंश में अहमदियत आप के पिता हज़रत सय्यद नाज़िम हुसैन साहिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के द्वारा से आई थी जिन्हों 1902 ई में बीस वर्ष की उम्र में क़ादियान जा कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की थी। सय्यद मसऊद अहमद शाह साहिब 1962ई में यूके आने के बाद स्थायी रूप से शेफ़ील्ड में रहते रहे। शेफ़ील्ड में जमाअत क़ायम होने पर आप की रिहायश गाह को प्रथम नमाज़ सैंटर बनाया और 1970 ई तक आप ही सदर जमाअत की ज़िम्मेदारियाँ सरअंजाम देते रहे। इसके बाद 1997 ई से लेकर आख़िर दम तक सैक्रेटरी अतिथि के तौर पर सेवा की तौफ़ीक़ पाई। मरहूम ख़ुश-मिज़ाज, मेहमान नवाज़, शरीफ़ उल-नफ़स, सेवा के जज़बे से परिपूर्ण, ग़रीबों के हमदर्द, एक नेक मुख़लिस और बावफ़ा इन्सान थे। ख़िलाफ़त के साथ बेपनाह अक़ीदत का संबंध था। आप की पुत्री डाक्टर आईशा साहिबा कहती हैं कि हमें जमाअत और विशेषत: ख़िलाफ़त के साथ जोड़ने का प्रयास करते रहते और हर छ: माह बाद ख़लीफ़तुल मसीह से मुलाक़ात का आदेश देते थे। अल्लाह तआला उनकी पुत्री और पत्नी को सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए। शाह साहिब से मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए और अल्लाह तआला उनकी औलाद को, एक पुत्री को ,पत्नी को उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 7 अगस्त 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ 2 का शेष

पर हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए तैयार खड़े थे। उन्होंने अपने विशेष ढंग में हुज़ूर अनवर को सलामी दी और स्वागतम कहा। इस अवसर पर प्रैस के फ़ोटोग्राफ़र भी उपस्थित थे जो निरन्तर तसावीर खीचं रहे थे।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी हिस्सा में लगी हुई तख़्ती का पर्दा हटाया और दुआ करवाई। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के अंदरूनी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए और नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा कर के पढ़ाई जिसके साथ इस मस्जिद का उद्घाटन अमल में आया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी सेहन में आलू बुख़ारा का पौधा लगाया और लार्ड मेयर MARCEL PHILIPP ने बादाम का पौधा लगाया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के बाहरी सेहन में लगाई गई मारकी में तशरीफ़ ले आए जहां सात बजकर 25 मिनट पर मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से आयोजन का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो आदरणीय सय्यद सलमान शाह साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला जर्मनी ने की । इसके बाद उसका जर्मन भाषा में अनुवाद आदरणीय बिलाल नवाज़ साहिब ने और उर्दू भाषा में अनुवाद आदरणीय अज़मत अली साहिब ने किया।

इसके बाद आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब (अमीर जमाअत जर्मनी) ने अपना परिचयात्मक भाषण प्रस्तुत किया और शहर आकिन (AACHEN) की तारीख़ वर्णन करते हुए बताया कि आकिन शहर सूबा वैस्ट फालेन में स्थित है और जर्मनी का सबसे ज़्यादा शहर पश्चिम में स्थित शहर है।

इस शहर की आबादी दो लाख 51 हज़ार लोगों पर आधारित है। हॉलैंड और बेल्जियम की सरहदें इस शहर के साथ लगती हैं। गंधक मिले गर्म पानी के चश्मे यहां पाए जाते हैं। लगभग तीन हज़ार वर्ष पूर्व मसीह के इस क्षेत्र में आबादी के आसार मिलते हैं। पहली बार लिखित रूप में इस शहर का वर्णन 765 ई में मिलता है।

रोमन अपने समय में अपने फ़ौजीयों के लिए THERMAL BATH बनाया करते थे और फिर CORLINGIAN के समय में इस शहर में तीस बादशाहों को सिंहासन पर बिठाया गया। इसी तरह नेपोलियन भी इस शहर में आकर रहा करता था।

936 में जर्मनी के पहले बादशाह को सिंहासन पर बिठाया गया। उस समय से ले कर 600 वर्ष तक AACHEN जर्मनी के बादशाहों की राजधानी रही और यहां बहुत से बादशाह दफ़न हैं।

यहां एक बहुत बड़ी यूनीवर्सिटी भी है। इस शहर में 50 हज़ार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

इस क्षेत्र में 1977 में अहमदी आकर आबाद होना शुरू और 1978 में नियमित तौर पर जमाअत का क़ियाम अमल में आया। अब दो सौ से अधिक लोगों पर आधारित जमाअत क़ायम है। अहमदी विद्यार्थी विभिन्न यूनीवर्सिटीज़ में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं । यहां की जमाअत ईद-मिलन पार्टीज़, रिलीजियस फाउंडर डे, क़ुरआन-ए-करीम की नुमाइशों का आयोजन करती है। एक जनवरी को वक़ारे अमल करके सफ़ाई की जाती है और पौधे लगाने में भी हिस्सा लिया है।

यहां मस्जिद की बनने से पूर्व कई प्रोग्राम हुए और पड़ोसियों के संदेह दूर किए गए। चर्च में भी एक बड़ा प्रोग्राम हुआ। हमारे ईमाम ने चर्च में नमाज़ जुम्आ भी पढ़ाई। अब उन लोगों को यह एहसास हो गया है कि हम शांति प्रिये लोग हैं और मस्जिद उनकी पड़ोसी होने का हक़ अदा करेगी।

मस्जिद की ज़मीन का कुल स्थान 2680 मुरब्बा मीटर है। यह 22 मार्च 2012 को ख़रीदा गया। इसकी ख़रीद में लोकल अथार्टीज़ ने बहुत सहायता की। यहां मस्जिद का नींव का पत्थर 5 जून 2012 को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने रखा। जो मस्जिद बनी हुई है इस में 76.30 मुरब्बा मीटर के स्थान पर दो अलग अलग हाल हैं एक पुरुषों के लिए है और दूसरा महिलाओं के लिए है। मीनार की ऊंचाई 14 मीटर है और मस्जिद के गुम्बद का क़तर 6 मीटर है।

अमीर साहिब जर्मनी के परिचयात्मक भाषण के बाद शहर आकिन के लार्ड मेयर MARCEL PHILLIP ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा सबसे पहले मैं सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह को स्वागतम कहता हूँ और आज इस आयोजन में शामिल होने वाले समस्त उपस्थित लोगों को सलाम प्रस्तुत करता हूँ।

मेयर ने कहा आज का दिन आकिन शहर के लिए एक ख़ुशी का दिन है। क्योंकि

यहां ख़ुदा तआला का एक नया घर बनाया गया है जिस का आज उद्घाटन हो रहा है और हमें इस बात पर ख़ुशी भी है और गर्व भी है कि इस मस्जिद की बनने के समय यहां के शहरियों ने कोई रोक पैदा नहीं की और कोई मुश्किल नहीं आई बल्कि शहर में एक एकता देखने को मिली है।

उन्हों ने कहा जो इमारत बनाता है वह वहां रहना भी चाहता है और आज इस मस्जिद के बनने से मालूम होता है कि आज यह जगह आपका वतन बन गई है। और आप सदैव के लिए यहां पर रहना चाहते हैं और जिस तरह आपने आज इस आयोजन में बहुत सारे लोगों को बुलाया है यह इस बात को स्पष्ट करता है कि आप छुप कर और अलग नहीं रहना चाहते बल्कि सब के साथ मिल-जुल कर रहना चाहते हैं और इस माहौल का और समाज का हिस्सा बनना हैं।

उन्होंने कहा कुछ लोग ऐसे होते हैं जो शहर के अमन को बर्बाद करना चाहते हैं और फ़साद पैदा करने की प्रयास करते हैं और इस के अतिरिक्त भी कट्टरवादी लोग होते हैं लेकिन हमें चाहिए कि हम मिलकर अपना अमन ख़राब न होने दें और यह मस्जिद का उद्घाटन इस बात को स्पष्ट कर रहा है कि वह फ़साद करने वाले ज़्यादा संख्या में नहीं हैं।

अंत में मेयर साहिब ने नेक तमन्नाओं का ईज़हार किया और कहा कि यह मस्जिद हमेशा प्यार और मुहब्बत से मिलने की जगह रहेगी। ख़ुदा तआला का फ़ज़ल और सलामती हम सब के साथ हो।

इसके बाद DR.STEPHANIE WALETZKI (मौसूफ़ा का सम्बन्ध INTEGRATION मिनिस्ट्री से है) ने सूबा NORDRHEIN - WESTFALEN के वज़ीर लेबर एंड ऐन्टी ग्रेशन HON.GUNTRAM SCHNEIDER का संदेश पढ़ कर सुनाया।

वज़ीर साहिब ने कहा "मस्जिद मंसूर" के उद्घाटन के अवसर पर समस्त अहमदियों को हृदय की गहराइयों से मुबारकबाद और सलाम प्रस्तुत करता हूँ। ख़लीफतुल मसीह की स्वयं हमारे शहर में और आज के इस प्रोग्राम में तशरीफ़ आवरी हमारे लिए बाइस-ए-इज़्ज़त है। ख़लीफतुल मसीह के आकिन (AACHEN) शहर आने की एहमीयत स्पष्ट होती है। मैं समस्त मेहमानों को भी स्वागतम कहता हूँ।

कुछ समय पूर्व कोलोन मस्जिद का उद्घाटन हुआ था। उसके बाद जमाअत ने हमारे इस सूबा में बहुत सी मस्जिदों बनाई। जमाअत ने यहां बहुत तरक़्क़ी की है। अहमदी यहां निहायत काम करने वाले शहरी हैं और विभिन्न प्रोग्राम आयोजित करते हैं ।आप अपने प्रोग्रामों के माध्यम, क्षेत्र की सेवा के माध्यम दूसरों को बताना चाहते हैं कि आप एक साथ मिल-जुल कर रहना चाहते हैं।

उन्हों ने अपने संदेश में कहा। हमें एक दूसरे के साथ सम्मान और सत्कार से प्रस्तुत आना चाहिए और एक दूसरे से अच्छी बातें सीखनी चाहिऐं।

बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो धार्मिक और नास्तिकों के मध्य दूरी डालना चाहते हैं और उनके मध्य फ़साद पैदा करना चाहते हैं उस के विरुद्ध हमें इकट्ठे हो कर मेहनत से काम करना होगा। जमाअत अहमदिया इस में एक अहम किरदार अदा कर रही है।

जमाअत अहमदिया का नारा कि "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं " स्पष्ट रूप से ज़ाहिर करता है कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत अमन के क़ियाम पर बहुत ज़ोर देती है और आपसी इत्तिहाद और मुहब्बत और भाई चारा पैदा करना चाहती है और कट्टरपंथियों को रोकना चाहती है।

उन्हों ने अंत में कहा। अहमदी बहुत स्पष्ट रूप से INTEGRATE हैं और हमारे समाज का हिस्सा हैं। आप सब अपने धर्म और रवायात के साथ जर्मनी और सूबह WESTFALENका हिस्सा हैं।

इसके बाद सूबा NORDRHEIN - WESTFALEN के मेंबर पार्लियामेंट KARL SCHULTHEIS ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा कि मैं सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह को स्वागतम कहता हूँ। हुज़ूर अनवर का यहां आकिन में आना हमारे लिए सम्मान की बात है।

उन्हों ने एक अहमदी दोस्त तारिक़ अरशद साहिब का वर्णन करते हुए कहा कि उनकी टाऊन हाल के सामने फूलों की दुकान है। तारिक़ साहिब हमेशा ख़ुशअख़लाक़ और सहायता करते हुए नज़र आते हैं और हमेशा से समस्त शहरीयों से और समस्त पार्लियामेंट के सदस्यों से अच्छे तरीक़ से प्रस्तुत आते हैं और वह अक्सर अहमदियत की तब्लीग़ करते हैं और राबते क़ायम करते हैं।

उन्हों ने कहा जो इमारत बनाता है वह इस में रहना भी चाहता है और जो ख़ुदा तआला का घर बनाता है वह तो निश्चित तौर पर रहना चाहता है। अत: आज का दिन जो कि बहुत ख़ुशी का दिन है और सबके साथ मिलकर इकट्ठे हो कर मनाया जा रहा है यह धार्मिक आज़ादी के बग़ैर मुम्किन नहीं होना था। हर इन्सान का यह बुनियादी हक़ है कि वह जो चाहे धर्म इख़तियार करे और उस पर अनुकरण करे।

उन्हों ने कहा कि "मस्जिद मन्सूर" के बनाने से जमाअत अहमदिया को भी वह सम्मान हासिल हो रहा है जिसका उनको हक़ है।

उन्हों ने कहा यह बहुत ज़रूरी है कि हम सब एक दूसरे के धर्म का इसी तरह सत्कार करें जिस तरह अपने धर्म का सत्कार करते हैं। इस तरह निश्चित तौर पर हम आपस में मिल-जुल कर मुहब्बत के साथ रह सकेंगे।

उन्होंने अंत में इस बात पर ख़ुशी का प्रकटन किया कि हमें मस्जिद के बनने के साथ आकिन (AACHEN) में बहुत अच्छा पड़ोसी मिल गया है। अल्लाह तआला यह हम सब के लिए बरकत वाला फ़रमाए।

आज मस्जिद मंसूर आकिन के उद्घाटन के अवसर पर प्रैज़ीडैंट पार्लियामेंट HON.MARTIN SCHULZ ने भी अपना संदेश भिजवाया।

आदरणीय अमीर साहिब जमाअत अहमदिया जर्मनी ने उनका यह निम्नलिखित संदेश पढ़ कर सुनाया।

सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद, लार्ड मेयर, उपस्थित गण !

मुझे ख़ुशी है कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत की "मस्जिद मंसूर" के इस उद्घाटनी आयोजन के अवसर पर मुझे आपसे कुछ कहने का अवसर दिया गया है। अपने कर्तव्यों की व्यस्तता के कारण से मैं आज के इस आयोजन में शामिल होने से वंचित हूँ। मस्जिद मन्सूर का उद्घाटन और विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के धार्मिक नेता की पधारने के बारे में यूरोप में बड़ा दिल होने के ना-मुकम्मल रास्ते में एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बुनियाद का पत्थर है।

अपने विचारों की अभिव्यक्ति और धार्मिक आज़ादी यूरोप के स्यासी प्रभुत्व में से है और यह प्रभुत्व "मस्जिद मंसूर" को आकिन (AACHEN) शहर के धार्मिक इदारों में शामिल करने से और भी मज़बूती पकड़ रहे हैं।

आकिन शहर तीन देशों की सीमा से मिलने के कारण से एक योरपी शहर है। यहां पर विभिन्न भौगोलिक सीमाएं और धर्म के अन्तर के बावजूद INTEGRATION को समझा और अमली ज़िंदगी में ढाला जाता है। परन्तु यह स्थिति योरपीय यूनियन में हर जगह पर नहीं। कुछ उलटी बहसों से क़ौमी स्वाभिमान को सीमा से अधिक उजागर करने के कारण से एक दूसरे के विरुद्ध डर पैदा किया जाता है और समाज को ग़ैर-मुस्तहकम करने की प्रयास की जाती है जब कि हम एक ऐसी कम्यूनिटी हैं जो रवादारी और आपसी सत्कार पर आधारित हैं।

''मस्जिद मंसूर"का उद्घाटन और इससे सम्बंधित समाजी और अख़लाक़ी सेवा आकिन शहर के बड़े दिल को स्पष्ट करती है। मैं जमाअत अहमदिया के लिए और इस के लोगों के लिए और उनके भविष्य के लिए नेक इच्छाओं का प्रकटन करता हूँ और समस्त लोगों को मुबारकबाद देता हूँ।

इस के बाद आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ख़िताब फ़रमाया

"मस्जिद मंसूर" आकिन के उद्घाटन के अवसर पर,
हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ख़िताब

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ताअव्वुज़ , तसमिया और तशह्हुद के बाद फ़रमाया

समस्त मुअज़्ज़िज़ मेहमानों को पहले तो मैं अस्सलामु अलैकुम विरहम अल्लाह वबरकाता का तोहफ़ा प्रस्तुत करता हूँ। अल्लाह तआला सबको अमन और सलामती पहुंचाए और यही हमारा संदेश है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुझे बताया गया है कि यहां मेहमानों को छ: बजे का समय दिया गया और मेरे यहां आने में पर्याप्त समय लगा। लगभग एक घंटा से अधिक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। प्रबन्धकों को मेरी यात्रा का अनुमान लगाकर समय देना चाहिए था। मैं आज सुबह लंदन से चला हूँ और बाई रोड आया हूँ ट्रेन की यात्रा के बाद फिर आगे रास्ते का ट्रैफ़िक और लम्बी यात्रा के कारण से मैं समय पर पहुंच नहीं सका तो सबसे पहले इस देरी के लिए क्षमा चाहता हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अब मैं इस विषय की ओर आता हूँ जो आज की मस्जिद के उद्घाटन का विषय है। आपके

सामने यहां क़ुरआन करीम की आयात की तिलावत की गईं। जिनमें बताया गया कि फ़ुज़ूलखर्ची न करो। खाओ पियो लेकिन फ़ुज़ूलखर्ची न करो। न्याय और इन्साफ़ से काम लो। तो यह एक ऐसी शिक्षा है जो मस्जिदों के साथ अल्लाह तआला ने जोड़ी है। और इसका सम्बन्ध मस्जिदों के साथ क़ायम किया है। इन्सान को ख़ुदा तआला ने केवल खाने पीने के लिए पैदा नहीं किया है। कुरआन क़रीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि पशु भी खाते पीते हैं तो पशु के खाने में और इन्सान में अन्तर होना चाहिए। असल हक़ीक़त यही है कि अल्लाह तआला ने इन्सान को दुनियावी लाभ उठाने के लिए खाने पीने की नेअमतें दी हैं तो उनसे फ़ायदा उठाए। जो सहूलतें दी हैं उनसे लाभ उठाए। लेकिन हर चीज़ में एक संतुलन होना चाहिए। एक बैलेंस होना चाहिए और ये बैलेंस क़ायम करना एक हक़ीक़ी इन्सान का काम है। और जब यह बातें होंगी तो अल्लाह तआला फ़रमाता है तुम्हारा ध्यान फिर इबादत की ओर भी पैदा होगा और मस्जिदों को आबाद करने की ओर भी पैदा होगी। अत: यह वह ख़ूबसूरत शिक्षा है जो अल्लाह तआला कुरआन क़रीम में हमें देता है कि दुनियावी चीज़ों से फ़ायदा ज़रूर उठाओ लेकिन यह भी याद रखो कि तुम्हारा उद्देश्य एक ख़ुदा की इबादत करना भी है और ख़ुदा के बंदों के हुक़ूक़ अदा करना भी है। अत: ज़रूरत से ज़्यादा अपने ऊपर ख़र्च करना और ज़्यादती करना इन्सान को अल्लाह तआला की इबादत से वंचित कर देता है और फिर उसके बन्दे के जो हुक़ूक़ हैं उनसे भी वंचित कर देता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दुनिया में बेशुमार ग़रीब लोग पाए जाते हैं, बेशुमार ग़रीब कौमें पाई जाती हैं, बेशुमार बीमार हैं, बहुत से ज़रूरतमंद हैं, बहुत से लोग ऐसे हैं जो शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं लेकिन गरीबी के कारण से शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते। यदि इन्सान को यह एहसास हो कि मैंने फ़ुज़ूलखर्ची नहीं करनी अल्लाह तआला ने जो मुझे नेअमतें दी हैं उनमें से बचा कर जहां मैंने अपने हक़ अदा करने हैं। इन्सान का सबसे पहला हक़ अपने पर है। अपने बीवी बच्चों के हक़ अदा करने हैं वहां मैंने इन्सानियत के भी हक़ अदा करने हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि तुम मेरी ओर ध्यान रखोगे तुम्हें यह ख़्याल पैदा होगा कि एक ख़ुदा है जिसने दुनिया को पैदा किया तो उसके शुक्रगुज़ार बनोगे। और यह शुक्रगुज़ारी ही इबादत है। और फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इस शुक्रगुज़ारी का प्रकटन मेरे बंदों की सहायता की सूरत में होगा तो यह एक बुनियादी चीज़ है जो अल्लाह तआला ने मस्जिदों के सम्बन्ध में वर्णन फ़रमाई। अत: यह देखें कि कैसी ख़ूबसूरत शिक्षा है जो हमें जहां मस्जिद के साथ जोड़े रखती है वहां हमें कल इन्सानियत के हक़ अदा करने की ओर भी ध्यान दिलाती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अमीर साहिब ने यहां वर्णन किया कि यहां बहुत सारे बादशाह आए। आकिन की तारीख़ बड़ी पुरानी है। दुनियावी बादशाहतें आने वाली और चली जाने वाली हैं। बहुत से बादशाह आए और आपने सुना, नेपोलियन का भी वर्णन हुआ। लेकिन यह सब आए और चले गए। कुछ ने अच्छा काम किया और उनको कुछ अरसा लोगों ने याद रखा और इस पर अधिक यह कि उनके अच्छे कामों के कारण से तारीख़ ने भी उनको कुछ सुरक्षित किया। इसी तरह कुछ ने सही काम नहीं किए होंगे। उन बादशाहों के अत्याचार की कहानियाँ भी होती हैं। तो बादशाह आते हैं चले जाते हैं उनके ख़ानदान भी ख़त्म हो जाते हैं उनके काम भी एक हद तक याद रखे जाते हैं या तारीख़ को याद रखने वाली कौमें कुछ किसी हद तक याद रखती हैं। लेकिन असल चीज़ जो हमेशा याद रखने वाली है वह असल बादशाह है जिस को याद रखने की ज़रूरत है और वह ख़ुदा तआला है, इस दुनिया को पैदा करने वाला है इस कायनात को पैदा करने वाला है। जो कहता है कि मैं रब भी हूँ, लोगों का पालन पोषण करने वाला भी हूँ, मैं मालिक भी हूँ, मैंने इस दुनिया को पैदा किया और मालिकियत के हुक़ूक़ मेरे पास हैं लेकिन इसके बावजूद मैं ज़ालिम नहीं हूँ, मैं इन्सानों को प्यार और मुहब्बत देता हूँ। और फ़रमाता है कि मैं माअबूद भी हूँ । मेरी इबादत करो। अत: ख़ुदा तआला वह बादशाह है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा, वह रब भी है, वह मालिक भी है , वह सर्वोतम भी है उसकी इबादत भी की जाती है। अत: दुनिया का कोई बादशाह इस बादशाह का मुक़ाबला नहीं कर सकता। इस लिए हमें सबसे ज़्यादा इस बादशाह को याद रखने की ज़रूरत है और जमाअत अहमदिया जब मस्जिदों बनाती है तो इस का एक उद्देश्य यह होता है कि इस कायनात के पैदा करने वाले ख़ुदा को याद किया जाए और दुनिया के समस्त धर्मों का इसी बात की ओर ध्यान हैं।

अल्लाह तआला जब फ़रमाता है कि मैं रब हूँ तो उसकी रबूबियत यह तक़ाज़ा करती है (रबूबियत का अर्थ है पालन पोषण करने वाला) कि जहां तुम अपना ख़्याल रख रहे हो पालन पोषण कर रहे हो वहां दूसरों का भी ख़्याल रखों क्योंकि कुरआन क़रीम की पहली सूरत में ही जब अल्लाह तआला ने अपने आपको रब कहा तो रब्बुअलालमीन कहा। ख़ुदा ने कहा कि मैं मुस्लमानों का भी रब हूँ, मैं ईसाईयों का भी रब हूँ, मैं यहूदीयों का भी रब हूँ, मैं हिंदूओं का भी रब हूँ, मैं समस्त धर्मों के मानने वालों का रब हूँ बल्कि जो मुझे नहीं मानते उनका भी पालन पोषण मैं कर रहा हूँ। अत: वह रब्बु आलमीन है जो दुनिया का पालन पोषण कर रहा है और इस का तक़ाज़ा यह है, ख़ुदा तआला हमें यह कहता है कि फिर तुम मेरी इबादत करो। अत: ख़ुदा तआला के घर बनाने, करने का यही उद्देश्य है कि उस की इबादत की जाए या किसी भी धर्म की जो धार्मिक स्थान हैं। उदाहरण के लिए churches, synagogues हैं उनकी बनने का भी यही उद्देश्य है।

फिर अल्लाह तआला ने यह भी बताया कि मैं क्योंकि रब हूँ इस लिए तुम भी मेरी सिफ़ात के द्योतक बनने का प्रयास करो अपने ऊपर ये सिफ़ात लागू करो और बंदों के हक़ भी अदा करो। मैं दुनिया का पालन पोषण कर रहा हूँ तुम भी दुनिया का पालन पोषण करो। मैं दुनिया को देता हूँ तुम भी ज़रूरतमंदो को दो। ग़रीबों की सेवा करो, लोगों से प्यार का सुलूक करो और यही शिक्षा है जो इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा है और यही वह शिक्षा है जिसको जमाअत अहमदिया अपने ऊपर लागू भी करती है इस पर अनुकरण करने की भी प्रयास करती है और इस को दुनिया में फैलाने की प्रयास करती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जमाअत अहमदिया ही है जो सही इस्लामी शिक्षा पर अमल करते हुए इन हुक़ूक़ की ओर ध्यान देती है और यही कारण है कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आज जमाअत अहमदिया दुनिया के आपदा ग्रस्त क्षेत्रों में पहुंच कर उनकी सेवा करती है और यह सेवा बग़ैर किसी धर्म और क़ौम के भेद भाव के है और इसके अतिरिक्त जमाअत सदैव सहायता भी कर रही है। स्कूल खोल कर, लोगों की ज्ञान की प्यास बुझा कर। यहां यूनीवर्सिटी का वर्णन किया गया है। आकिन में यूनीवर्सिटी है । तो हक़ीक़त में ज्ञान एक ऐसी चीज़ है जिसका हासिल करना दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है और यह इस शहर की बड़ी ख़ूबी की बात है कि यहां एक यूनीवर्सिटी भी क़ायम है और निश्चित तौर पर यहां इस कारण से ज्ञान का मयार भी बहुत बुलंद होगा। तो बहर-हाल मैं वर्णन कर रहा था कि जमाअत अहमदिया मानव सेवा के उद्देश्य से स्कूल भी खौलती है। लोगों को सेहत की सहूलतें प्रदान करने के लिए हस्पताल भी खोलती है और अफ़्रीक़ा के दूर दराज़ क्षेत्रों में हमारे हस्पताल और स्कूल चल रहे हैं। इसी तरह दूसरे प्रोजेक्ट भी चल रहे हैं। तो यह मानव सेवा हमें हमारे धर्म ने, हमारी शिक्षा ने सिखाई और इस खुदा ने हमें बताया जिसकी हम इबादत करते हैं और इसी लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यदि तुमने मस्जिदों आबाद करनी हैं मस्जिद बनानी हैं तो उनकी आबादी का हक़ और उन मस्जिदों में आने का हक़ उस समय अदा होगा जब तुम केवल इबादत नहीं कर रहे होगे बल्कि इन्सानियत की सेवा भी कर रहे होगे लोगों के हुक़ूक़ भी अदा कर रहे होगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यहां इमारतें बनाने का वर्णन हुआ है और यहां मेयर साहिब ने भी वर्णन किया है कि इमारत बनाते हैं तो रहने के लिए बनाते हैं लेकिन हमने जो यह मस्जिद बनाई है केवल रहने के लिए नहीं बल्कि यह मस्जिद हमने इस लिए बनाई है कि अल्लाह तआला का हक़ अदा करने वाले भी बनें और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा भी दूसरों को बताएं । आम तौर पर इस्लाम की कल्पना जो लोगों के ज़हनों में है कुछ लोग उस का प्रकटन कर देते हैं कि सब मुस्लमान कट्टरवादी हैं। कुछ खुल कर प्रकटन नहीं करते लेकिन दिल में बहर-हाल एक संदेह और reservation रखते हैं कि इस्लाम उग्रवादी धर्म है। लेकिन हक़ीक़ी तौर पर इस्लाम कट्टरवादी धर्म नहीं है। जो मैंने संक्षेप में बातें की हैं। इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा तो यह है कि हमारा रब, हमारा पालने वाला, हमारा माअबूद तो हमें ये बातें बताता है कि जहां तुम इबादत का हक़ अदा करो वहां उन लोगों के हुक़ूक़ भी अदा करो। बल्कि कुरआन क़रीम में ही अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया है कि वे नमाज़ी जो मस्जिद में आते हैं और सही तरह बंदों के हुक़ूक़ अदा नहीं करते, उनकी इबादतें उनके मुँह पर मारी जाती हैं। उनको वापिस लौटा दी जाती हैं। और यही उनकी ज़ाहिरी इबादतें उन के लिए हलाकत का कारण बन जाती हैं। अत: जब तक उच्च आचरण न हो जब तक लोगों के हुक़ूक़ अदा न हो रहे हों केवल इबादत पर्याप्त नहीं है। इस लिए जमाअत अहमदिया इस बात पर कार्यरत है कि हम वह हक़ीक़ी इबादत करें कि जहां ख़ुदा तआला के हुक़ूक़ अदा हों वहां उस के बंदों के भी हुक़ूक़ अदा हों।

(शेष.....)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 7 January 2021 Issue No.1

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

है। लोगों ने ताऊन के हाथ देखे नहीं। जहां कोई मरता है वहां नाक नहीं दिया जाता। गर्वनमेंट के बारे में कुधारणा अपवित्र विचार हैं। गर्वनमेंट ने जो सोचा है वह सही है। हमारी जमाअत को अनिवार्य है कि गर्वनमेंट की मदद करें और हिंदू हों या मुसलमान अपने पड़ोसी दोस्तों को समझाएं। और इस धोखा और ग़लत-फ़हमियों को दूर करें कि गर्वनमेंट ने मारने का परामर्श किया है। कोई इन नादानों से पूछे कि लाखों रुपया गर्वनमेंट मारने के लिए खर्च कर रही है। और इतने कष्ट उठाने का उसे शौक़ है।

असल बात यह है कि ताऊन बहुत हलाक करने वाली है।

ताऊन क्या होती है

प्रथम समझ लेना चाहिए कि ताऊन क्या होती है। वह एक भयंकर तप आता है। बेहोशी, मतली, सिर दर्द, भूल जाना होता है, कमज़ोरी बहुत होती है, बेचैनी और व्याकुलता होती है। फिर कुछ दिन के बाद एक फोड़ा निकल आता है कभी तो वह छोटी फुंसी होती है और कभी ज़्यादा और कभी यह भोड़ा रान में निकलता है। कभी पीठ में और कभी गर्दन में निकलता है यहां तक कि सरसाम हो जाता है शायद ये सब कुछ चौबीस घंटा में हो जाता है।

गर्वनमेंट को पता मुश्किल से मिलता है। और बीस घंटा तक तो लोग कुछ तो मामूली बुख़ार समझ कर और फिर ताऊन के चिन्ह देखकर उसे छुपाते हैं। और जब प्रभाव हो चुकता है तो कहीं जा कर गर्वनमेंट को पता मिलता है। अब एक दो घंटा वहां रह कर यदि वह मरे न तो और क्या हो। अत: यह अज्ञानता और मूर्खता है कि क़सूर अपना है और उसे थोपा जाता है गर्वनमेंट के सिर। यदि गर्वनमेंट ग़लती करे तो हमारा हक़ है कि हम उस को वर्णन करें बल्कि गर्वनमेंट की नेक नीयती और भलाई चाहना तो यहां तक है कि उसने ख़ुद परामर्श लिए परन्तु हमारा देश वास्तव में असभ्य और जाहिल है। ग़ुस्सा और कुधारणा के अतिरिक्त हाथ में कुछ नहीं। अपने ग़लत कार्यों का इल्ज़ाम गर्वनमेंट को देते हैं और कुछ नहीं सोचते। काश यह सैंकड़ों अंजुमनें जो देश में फैल रही हैं इस काम की तरफ़ ध्यान करें और जाहिलों के दिलों से यह कुधारणएं गंवाएं तो मानव जाति की कितनी भलाई हो।

तुम अज्ञानता के लिहाफ़ों में पड़े सो रहे हो जिन बे आरामियों और कष्टों में तुम्हारे जैसे लोग पीड़ित हैं तुम्हें उनकी ख़बर नहीं। गर्वनमेंट जिस क़दर रुपया इन मुसीबतों से नजात पाने के लिए अपनी प्यारी प्रजा के लिए खर्च कर रही है यदि चंदा करके वह खर्च करना पड़ता और यह हुक्म होता कि गांव गांव के लोग चंदा करें तो कोई एक पैसा भी देने पर राज़ी न होता। मैंने भी एक दवा तैयार करनी चाही है और मैं इसके तैयार करने में लगा हुआ हूँ। ख़ुदा शेख़ रहमतुल्लाह साहिब को नेक बदला दे जिन्होंने ख़ुदा तआला ही के लिए दो सौ रुपया इस नेक कार्य में दिया है मैंने इस बीमारी के कारणों को ख़ूब समक्ष रख लिया है। बात यह है कि इस बीमारी के कई हिस्से होते हैं। इस लिए तबीब को उचित और अनिवार्य है कि वह हर हिस्सा और कारण को समक्ष रखे। रद्दी ख़राकें और ज़हरीली हवाएं इस बीमारी को बहुत ज़्यादा फैलाती और ख़तरनाक बना देती हैं। ज़मीन के निचले हिस्सा से ऐसी ज़हरीली हवाएं सांस के माध्यम या ख़ुराक के माध्यम इन्सान के ख़ून में ज़हर और गंदगी पैदा करती हैं।

नए विज्ञानं के शोध से इस्लाम का समर्थन

आजकल की शोध में ताऊन की जड़ कीड़े या छोटे अज़्राम प्रमाणित हुए हैं। मैं भी इस शोध को पसंद करता हूँ क्योंकि इस से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्मान और इस्लाम की सच्चाई प्रमाणित होती है। हदीस शरीफ़ में जहां यह वर्णन आया है वहां नग़फ़ उसका नाम रखा गया है। और

पृष्ठ 2 का शेष

जब वास्ता पड़ेगा पड़ेगा। क्योंकि इस में पाँच ज़मानों का वर्णन है। एक बे-जान होने का युग दूसरा दुनयावी जीवन का युग। तीसरा शारीरिक मौत का युग। चौथा फिर एक नए जीवन का युग और इसके बाद वो युग जब इन्सान ख़ुदा तआला के सामने प्रस्तुत होगा। अर्थात हश्र मौत के बाद हयात और हयात के बाद सुम्मा का शब्द रखकर इलैही तुर्जऊन फ़रमाना बताता है कि मौत के तुरंत बाद एक प्रकार का जीवन तो मिल जाता है परन्तु हश्र बाद में होता है यह जीवन जो हश्र से पहले मिलता है अनिवार्य है कि इस में कोई नेक या बद सुलूक इन्सान से हो अन्यथा इस हयात के अर्थ ही कोई नहीं। और यदि नेक और वुरा व्यवहार होता है तो मालूम हुआ कि हश्र से पहले भी एक अपूर्ण सवाब औरअपूर्ण अज़ाब है और इसी को सज़ा-और-जज़ा-ए-क़ब्र कहते हैं जो अहादीस नबी करीम सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम से भी प्रमाणित है। क़ुरआन-ए-करीम की एक और आयत स्पष्ट रूप में इस अज़ाब का वर्णन करती है। फ़रमाता है

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ

(मोमिन रूकुआ 5) अर्थात फ़िरऔन की क़ौम को सुबह और शाम दोज़ख़ के सामने किया जाता है। और जब क़ियामत का दिन आएगा तो कहा जाएगा कि ऑल फ़िरऔन को सख़्त अज़ाब में दाख़िल करो। इस आयत से ज़ाहिर है कि दोज़ख़ में दाख़िल होने से पहले ऑले फ़िरऔन को अज़ाब मिलता रहेगा और क़ुरआन-ए-करीम को नुज़ूल के समय में भी मिल रहा था।

(तफ़सीर ए कबीर, भाग 1 पृष्ठ 265 266 प्रकाशित क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

नग़फ़ उस कीड़े को कहते हैं जो बकरी और ऊंट के नाक से निकलता है और उसे ताऊन कहा गया है। आजकल के शोध पर बड़ा गर्व किया जाता है परन्तु जिस ने पवित्र इस्लाम के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र वाणी को पढ़ा है उसे कितना आनन्द और मज़ा आता है। जब वह तेराह सौ वर्ष पूर्व उसके पवित्र होंटों से उन बातों को निकलते हुए देखता है। क़ुरआन करीम भी इस को कीड़ा ही बतलाता है। अब हे नए शोध पर इतराने वालो! ख़ुदा के लिए कुछ इन्साफ़ को काम में लाओ और बताओ कि क्या वह धर्म मनुष्य का बनाया हो सकता है जिस में ऐसे हक़ायक़ पहले से मौजूद हों जो तेरह सौ वर्ष की मेहनतों और शोधों और अत्यधिक परिश्रम का परिणाम हों। यह क़ुरआन करीम और हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बुद्धि वाले चमत्कार हैं। देखो क़लब दिल को कहते हैं और क़लब गर्दिश देने वाले को भी कहते हैं। दिल पर ख़ून के संचार की ज़िम्मेदारी है। आजकल के शोध ने तो एक समय पूर्व की मेहनत और दिमाग़ खर्च करने के बाद रक्त संचार का विषय पूछा गया परन्तु इस्लाम ने पहले ही से दिल का नाम क़लब रखकर इसी सच्चाई को वर्णित और सुरक्षित कर दिया।

(मलफ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 236 237 प्रकाशित क़ादियान 2018)

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad